ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

जनवरी-फरवरी 2024, वर्ष-7, अंक-11

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला

अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना विनोद यादव, गाजियाबाद

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

आपन बात – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/5

• धरोहर

नाचै निरखि निरखि दरपनवाँ में–
पं हरिराम द्विवेदी /6

आलेख/शोध लेख/निबंध

पंडित हरिराम द्विवेदी होखला के माने मतलब–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /11–12
बूँटः अनाजन के सिरमौर/33–34
भोजपुरी के उत्थान काहें नाही?–राजू साहनी/41

• समीक्षा/पुस्तक चर्चा

'स्मृति में बसल गाँव के कहानी के बहाने
लोक संस्कृति आ जिनगी के बखान–कनक
किशोर/13–20

'आपन आरा' के बहाने एगो खास दौर के
शैक्षिक आ साहित्यिक पड़ताल–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/21–22

दू बून लोर बा आ हम बानी– चंद्रेश्वर/23–24
सौरभ पाण्डेय जी के 'बतकूचन' के बारे में
–डॉ सुनील कुमार पाठक/25–30

भोजपुरी आलोचना के चमकत रंग ह ' रंग बिरंग'–
रवि प्रकाश सूरज/44

अनगढ़ हीरा के तराशत तैयब जी –
रवि प्रकाश सूरज/45

• कविता/गीत/गजल

पं हरिराम द्विवेदी जी के चुनिन्दा गीत/7–9
गजल–अजय साहनी/20
कवन पाठ पढ़ीं – देवेन्द्र कुमार राय/22
गीत–बिमल कुमार/24
गत्ते गत्ते नयेकी सरकार आवेले– डॉ शंकर मुनि
राय 'गड़बड़'/30
पाँच गो गीत – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/31–32
ठीक नइखे– मदनमोहन पाण्डेय/32
तीन गो गीत– अंकुश्री /39
जिनगी के लेखा जोखा– बिम्मी कुंवर/40
गोदना गीत– डॉ रजनी रंजन /41
बाजे बधाई–केशव मोहन पाण्डेय/46

संस्मरण/स्मृति आख्यान

आपन कहानगी– पं हरिराम द्विवेदी /10–11

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

एलियन भाई–लव कान्त सिंह/35–36
दिन बदली–डोली साह/37–38
जबरिया–सविता गुप्ता /40
नचनियाँ– डॉ रेनू यादव/42–43

साहित्य समाचार

दरद के सोन्हाई के लोकार्पण /46

■■

आपन बात ---

भोजपुरी साहित्य के लेके अनथकले चलत कवायदन का संगे नवके बरीस के जनवरी एगो दुख भरल समाचार के संगही आइल, कहल जाव त गलत ना होखी। भोजपुरी के गीत पुरुष पं हरिराम द्विवेदी के अचके गोलोक गइल, सभे के आँखिन में लोर के बैतरनी बहवा गइल। भोजपुरी साहित्य जगत के उनुका कमी हरमेसा सालत रही। हमरा ला त बेकतीगत तकलीफ के बाति भइल, उहाँ के हमार बड़का बाबूजी रहनी। भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार 'हरि भइया' / पं0 हरिराम द्विवेदी के चरनन में आपन आपन सरधा सुमन अरपित करि रहल बा। संगही उनुका कहानगी आ समरपन के आपन मूल मंत्र बना के आगे चलै ला कटिबद्ध बा।

ई महिना एगो बहुते सुखद समाचारो अपना संगे लियाइल बा। अयोध्या के नवके राम मंदिर में 'बालक राम' के प्राण प्रतिष्ठा भइल। सगरी विश्व राम मय हो गइल। पाँच सदियन के प्रतीक्षा खतम भइल। प्रभु राम एक बेर फेर से साहित्यकारन के कंठहार बन गइलें। हिन्दू समाज अनघा उछाह से भरल बा, काहे से कि अलभ्य के प्राप्ति सरीखा ई पल भेंटाइल। प्रभु राम सभे के मन –प्रान आ चरित्र में बसत लउके लागल बाड़ें। अनगिनत लोराइल आँखि गवाह बानी सन। राम के बेगर कवनो कलपनो कइल संभव नइखे, काहें कि प्रभु राम एह राष्ट्र के अवधारणा बाड़ें। अनगिन लोगन खातिर ई पल उनुका जिनगी के सारथक बनावत सपना के सच होखला से मिलल अमरित फल लेखा बा। तबो कुछ लोग इहवाँ अइसनो बा, जिनका ई अद्भुत पल ना सोहाइल। लोगन के भगवानों से नेवता चाहत रहे। जब नेवता भेंट. इल , त ओकर अपमान कइलस लोग। ई उहे लोग बा जेकरा राम काल्पनिक बुझालें। प्रभु राम अइसनों लोगन के सद्बुद्धि देसु, इहे प्रार्थना बा।

पछिला अंक से जवन एगो लक्ष्य बना के चले के परयास शुरू भइल बा, उ एह घरी से गवें गवें गति पकड़ रहल बा। भोजपुरी के पुस्तकन के समीक्षा आ ओह पर बतकही के क्रम के आगहूँ बरकरार राखे के जुगत चलत रहे, एह दिसाई काम करत रहे के बा। एकरा संगही नवके बरीस के एक बेर फेर से बधाई आ शुभकामना !!

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

■■

नाचै निरखि-निरखि दरपनवाँ में

पवना बेनिया डोलावै
बदरा रस बरसावै
गावै झूम–झूम मनवाँ सिवनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

भिनसहरे जँतसार गीत कै बोल
जइसे केहू पइठ के भित्तर लगै हियरवा टोवै
माटी सगुन जगावै
भरि नेह दुलरावै
पावै सुखवा जोगवले परनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

बिहने भुइयाँ उतरि किरिनियाँ अँचरा लगै पसारै
तनै उमिर कै ताना बाना जिनगानी पुचकारै
सागरों पसरे अंजोरिया
कत्तों रहै न अन्हरिया
रेंगे लागैला असरवा अंगनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

मचिया बइठै आजी लेके छोढी चलै कमोरी
देखतै बनै दुलार घरै जब लैनू काढ़ गदोरी
जिया अस कै लोभाला
किछु कहलो न जाला
सुख सरगै उतरै भवनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

गहबर पियरी पहिर खेत मेंखड़ी फसिल गदराइल
सबही के मन टटकी टटकी साध लगै अँखुआइल
कइसन सपना सजावै
केतनी मनिया पिरोवै
झाँकि झाँकि रहै अपनै अंगनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

पाखे के खोता मेंबइठल गावै सोनचिरइया
घुटुरुन ढुरकत देखि बकइयाँ भरि जाले अंगनइया
सझा कहनी कढ़ावै
रतिया लोरी सुनावै
ममता निदिया बलावै नयनवाँ में
नाचै निरखि–निरखि दरपनवाँ में।

❑❑

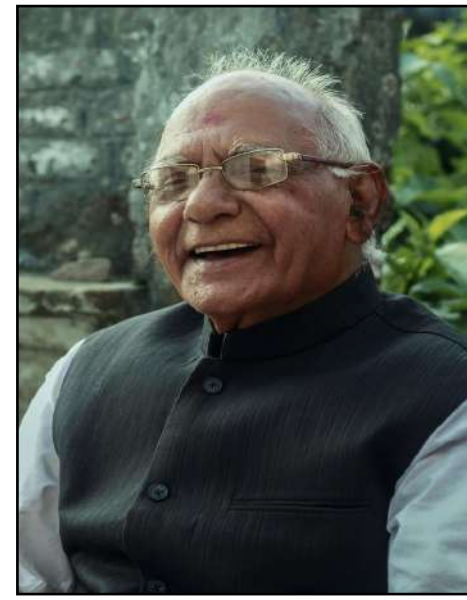

हरिराम द्विवेदी

जन्म– 12 मार्च 1936

मृत्यु– 8 जनवरी 2024

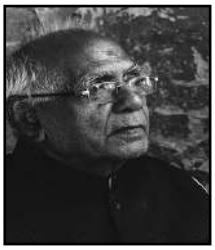

पं0 हरिराम द्विवेदी जी के चुनिन्दा गीत

हरिराम द्विवेदी

नदिया देखतै नहाये कै मन करै

नदिया देखतै नहाये कै मन करै
निरमल ई नदिया कै पानी
केहू नाही करै मनमानी
गगरिन तलक भराए कै मन करै

पौंड़े नदिया बीच मछरिया
लखि लखि अइसन उठइ लहरिया
मछरी अस बनि जाये कै मन करै

सबके आपन जानै नदिया
नहके ठनगन करे ननदिया
ओसे ना अझुराये कै मन करै

ओही पारे लगे बजरिया
तरसै जेकरे निमित नजरिया
नदिया के पार जाये कै मन करै

ई नदिया एतनी मनभावन
जीव जुड़ावन लगे लुभावन
एही तट बसि जाये कै मन करै
एही मेंधँसि के नहाये कै मन करै।।

❑❑

चान माँगै ललना

चान माँगै ललना तरइया माँगै ललना
रोइ रोइ गोलकी जोन्हइया माँगै ललना

केहू बतावै कहवाँ जाईं
सरग के तरई कइसे पाईं
कवन खेलौना दे बबुआ के
कउनी जोगिम से चुपवाईं
लोट पोट करै अँगनइया माँगै ललना

ताल तलइया नरई जामें
बछरु गइया घामें घामें
कहाँ भेटाई कइसे आई
तरई बाटै केतनी लामे
सुझै नाही कउनो उपइया माँगै ललना

रोज सबेरे जब पह फाटै
चलै अंजोर अन्हरिया छांटै
बिहने–बिहने जोति किरन कै
सच्चों केतनी बढ़िया बाटै
भोरे भोरे सोन चिरइया माँगै ललना।।

❑❑

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

विदाई गीत

अमवा लगइहा बाबा बारी बगइचा,
निमिया लगइहा दुआर
पिपरा लगइहा बाबा पोखरा के भिटवाँ,
गोंइडे लगइहा बँसवार

अमवा सयान होइ फरिहै ए बाबा
निबिया देही जूड़ छाँह
पिपरा के डरिया पर पड़िहें झलुअवा
बँसवा वीरनवा के बाँह

अमवा लगइबै बेटी बारी बगइचा,
निबिया लगइबै दुआर
पिपरा लगइबै बेटी पोखरा के भिटवाँ,
नाही लगइबै बंसवार

काहें न बँसवा लगइबा ए बाबा,
बँसवा सगुनवाँ के खान
सुपली मउनियाँ से ओड़िचा चंगेलिया
सबही जे करैला बखान

बँसवा से ए बेटी डोलवा फनाला
होई जाला घर सुनसान
बिटिया के बाबा से पूछा न कइसन
मड़वा के होला बिहान।

❑❑

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

गंगा से

नार नदी जलधार मिलै कवनो सबके अपनावत जालू
कइसों रहै अपनाई के ओके सदा अपनै में मिलावत जालू
पीर सबै ओरवाइ के ओकर धीर हिया में बन्हावत जालू
बाबा के देन इहै बा तोहैं विष पीयत जालू पचावत जालू

दीन दुखी जन कै जग में तोहई सुनल कि बनैलू सहारा
तोरे दुवारे मिलै सुख चैन कतौं नाही जेकर होय गुजारा
ओहू के पार लगाइउ जेकर बूड़त नाव रहै मजधारा
कोटिन कोटिन पापिन के तरलू जननी हमके न बिसारा

एकउ पूजा कै रीति न जानी मोरे पजरे कुछ साधन नाही
श्रद्धा के भक्ति के भावना से भरि गावत गावत तोहें सराहीं
बा बिनती एतनै न फिरै मन माई हो पूत कै धर्म निबाही
तोरे दुआरे भिखारिन सेवा सिवाय नाही कुछ आउर चाही

नेह बसाइब हिये एतना तब आउर केकर आस लगाईं
धीरज साथ न छोड़इ लागै पियास त धाई पियास बुझाईं
दीन मलीन औ साधनहीन भले रहीं आउर के पास न जाईं
बा अरदास इहै मन में तोरे दास के दास कै दास कहाईं

एक इ साध रही मन में तोहरे तट एक कुटी बनवाईं
तोहैं निरंतर देखि के पूजा करीं तोहरै तोहरै गुण गाईं
साँझ बिहान सबै दिन तोरइ पावनिधि के बीच नहाईं
तोरइ गोदी में आँचर की छहियाँ सगरी जिनगानी बिताईं

बाँटत आवत बाट सबै सुख हे जननी हम का तोसे माँगी
तोरइ पावन प्रीति की रीति में लीन सदा तन आपन पागी
राग बढ़ै मन में कबहूँ तब केवल तोरइ में अनुरागी
चाह इहै तहरै गुण गावत तोरइ तीर परान तियागी।

❑❑

रोवाँ झरेला

रोवाँ झरेला जब जब चुनाव आवैला
तरवा चाटैं धीरे धीरे सुहरावैला
हार जीत से कउनो मतलब नाहीं राखै
जेतना भी लह जाला ठाट से लहावैला
गाँव से सिवाने तक
साव के दुकाने तक
सड़क से शुरू होके
घरे के दलाने तक
चोकरैला घूम–घूम कइके हड़कम्म
गजरदम्म गजरदम्म

इनसे पूछै कब्बो उनसे बतियावैला
इनकर उनसे उनकर इनसे बतलावैला
आग लगाके लामे से खाली देखैला
मोका मिलतै ओम में घिउवै ढरकावैला
दादा से पोता तक
पिंजरा के तोता तक
लुत्ती लेसैला ऊ
चिरई के खोता तक
उछरैला कूदैला छम्म छमाछम्म
गजरदम्म गजरदम्म

अमन चैन से केहू गाँव में न रह पावै
आपन दुख दरद नाहीं केहू से कह पावै
अइसन माहुर घोरै पता न चलै तनिको
हावा से नद्दी तक चैन से न बह पावै
साँझ से सबेरे तक
घरे के बँड़ेरे तक
अगिलही लगावैला
रइन के बसेरे तक
फरदउरे भी सबके लागै सकदम्म
गजरदम्म गजरदम्म

❑❑

बैन फकीरा

हँसि हँसि बोले बैन फकीरा
जग में उ प्रानी बड़भागी
जे जानै पर जन की पीरा
हँसि हँसि बोले बैन फकीरा

आपन आन भेद ना जानै
सबही के अपनै अस मानै
ओकरी खातिर अंतर नाही
माटी सोना चानी हीरा
हँसि हँसि बोले बैन फकीरा

खींच देत पानी पर रेखा
भइया देख सका तै देखा
मुट्ठी में बयार बान्हैला
तोहऊँ चीर सका तै चीरा
हँसि हँसि बोले बैन फकीरा

घोर अघोर सोर से हटके
पीछे ताके नाहि पलट के
मगन रहै अपनै में हरदम
कबहूँ मीरा कबहु कबीरा
हँसि हँसि बोले बैन फकीरा

तजि के सब बंधन सुख माया
साधि साधि कइ निरमल काया
झंखै ओकरी मस्ती आगे
वैभव रतनन भरल जखीरा
हँसि हँसि बोले बैन फकीरा

❑❑

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता सहित्यांगन

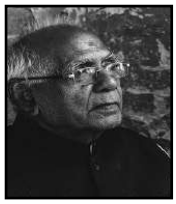

आपन कहानगी

हरिराम द्विवेदी

भोजपुरी साहित्य सरिता के अक्टूबर–2018 अंक पंडित हरिराम द्विवेदी विशेषांक रहल। ओह में हमनी के द्विवेदी जी कुछ लिखे क निहोरा कइले रहनी सन। उहाँ के हमनी के निहोरा के मान राखत 'आपन कहानगी' लिख के भेजले रहनी। आजु उहाँ के हमनी के बीचे नइखी बाकिर उनुकर कहानगी हमनी के खातिर प्रेरणा के पुंज लेखा हमनी के हिया में हमेसा विराजत रही।

अपने बारे मे कुछ कहब चाहे लिखब बहुत कठिन कारज लगैला। का लिखीं कहाँ से लिखीं कइसे लिखीं ई कुल सवाल सामने आके ठाढ़ हो जालै। एह सवालन कै न त अपने पास कउनों जबाब बाय न त ओपर सोचौ बिचारै कै मन। लिखै के हौ त कुछ लिखबै करब एहसे जवन कुछ उपजी कलाम के नोक से बह जाई। ई के के कइसन लागी नाही मालूम। एही से आउर कुछ न कहिके अपने से जवन उकेरत बानी ऊ परोस रहल हई।

कवितई कै साध बचपनै से मन मे उठत रहल लेकिन लिख न पाई। अपने इहाँ के लोकगीतन के सुन के मन करै कि अइसनै लिखीं लेकिन लइकइयाँ के कारन डर लगै, लाज भी लगै कि लोग का कहिहै का सोचिहें। संजोग से गाँवे एक बेरी भजन–कीर्तन कै आयोजन भयल। मंदिर पर तमाम लोग जुटलै ओही मे हमरे गाँव के पासै के दुई कवि लोग भी आयल रहलें। ओनही लोगन के लिखल गीत आउर पद ओनही लोगन के चेला चपाटी गावै आयल रहलन। बइठकी जम गइल जवन आधी रात ले चलल। ऊ कुल सुनि के मन मे हूक उठै लगल। ओही के बाद धीरे–धीरे लिखै शुरू कइली। चोरी–चोरी लिखीं लेकिन केहू के देखावै मे लाज लगै। वइसे अपने पारंपरिक संस्कार गीतन कै गहिरी छाप अपने पर रहल जवन भीतरै भित्तर मथत रहल। आखिर मौका पायके ऊ अपने आपै फूट के बहि चलल।

विश्व विद्यालय मे पढ़ाई के समय बनारस मे धीरे–धीरे आउर रचनाकारन से परिचय भयल। केसे का मिलल ई त नाही कह सकिला लेकिन एक बात जवन आजो कुरेदैले ऊ जिनगी भर कुरेदत रही। नेह छोह त जबानी बहुत लोग देखउलें बाकिर भित्तर से केतना करिखाह रहलै ई कुछ दिन बाद देखाए लगल। हिन्दी के बड़वार कवि जेकर खूब नाम होय गयल रहै ऊ लोग बहुत हेय समुझै काहे से कि हम अपने इहाँ बोलै जाये वाली बोली मे लिखत रहली। एक जने परिचय करावत के कहलें कि ई आंचलिक कवि हउवै जउने के सुनि के जेसे परिचय करावल जात रहल ऊहो बहुत हल्का ढंग से लिहलै। एह ढंग के पीरा बहुत दिना तक झेलत समय ओराय गयल। लेकिन एक बात हमरे भित्तर बनल रहै कि केहू कुछ कहै आपन काम अपने ढंग से करत रहीं। केहू के बदे इरखा, डाह, जलन या गुस्सा नाही उपजै देही। खराब लगै तउनों के बरदास कै लेहीं। एतनै नाही अपने भित्तर कउनों तरह के हीं भावना भी नहियै पनपै दिहली। एह बात कै बलुक गुमान रहै कि हम अपने ओह बोली मे लिखत हई जवन लइकइयाँ मे महतारी के दूध के संगे घर अँगना मे सिखले हई।हम्मै आजो तनिको संकोच नाही लगैला इ कहै मे कि हम भोजपुरी मे लिखिला। आपन बोली आपन भाषा महतारी अस लागैले काहे से कि माइयै के संगे ओही के अँचरा के छाहें एके सिखले हई। हम्मै अपने बोली मे केहू से बतियाइब बड़ा नीक लागैला। एही से आपन पहिचान हौ,एही मे आपन लोक परम्परा कै अकूत सम्पदा बाय जउने से अपने भोजपुरिया समाज कै पहिचान होला। माई के माई कहै मे कइसन लाज आ संकोच। माई माई होले ओकर दाँज केहू नाही दे सकी।

धीरे–धीरे समय बीतत गयल, गति भी बढ़त गइल। एही बिच्चे कुछ बड़वर रचनाकार आ विद्वान लोग सराहै लागल। लोगन के नेह–छोह भी मिलै लागल। लोग अपनइयत देखावै लागल। हमहूँ सबके आदर मान देत अपने ढंग से चलत गइली मुड़ के पीछे नाही देखली। एही बिच्चे अचानक आकाशवाणी इलाहाबाद से जुड़ गइली। उहाँ से कार्यक्रम मिलै लागल। साल मे दू तीन बार जाये के मोका मिल जाय। उहाँ भोजपुरी आउर अवधी के बड़ रचनाकारन से भेंट होत रहै। बाद मे संजोग कहीं कि सुजोग आकाशवाणी इलाहाबाद मे सेवा बदे बलाय लिहल गयल। पंचायत घर मे बोलत बतियावत लोगन से जान–पहिचान बढ़त गइल। एही मे लिखत पढ़त आज जहाँ बाड़ी अपने के सुखी आ संतुष्ट महसूस करीला।

गाँव छोडले हमके 67 बरिस हो गयल लेकिन न गाँव छूटल न गाँव से आपन नाता छूटल। उहाँ आपन घर–दुवार, खेती–बारी, भाई–पट्टीदार सभै हौ। सबसे आपन संबंध भी ठीक हौ केहू से न लड़ाई न दुस्मनी। जेसे जवन संबंध हौ, निबाहै क जोगिम करीला आ निभाइला भी।

कवितई मे तुकबंदी करत लगभग छ दशक से ऊपर होय गयल। एक कलक, एक कसक अबहीं तक बनल रहि गइल, ऊ नाहिये मेटाइल। बड़ी साध रहै कि अपने पारंपरिक लोकगीतन अस गीत लिखै आय जात लेकिन अब तक उ नाहिये आयल। ऊ भाषा मयस्सर नाही भइल। लोकगीतन कै सहजता ओकर परान हौ। न कउनो बनावट, न कउनो बुनावट, न कउनो कलाकारी, न ही कसीदाकारी। एकदम सरल भाषा, एकदम सहज अभिव्यक्ति जेके सुनतै, जेके पढ़तै जीव हुलसि जाला। पारंपरिक लोकगीतन के छुवन अनियासै बेध जाले। चाहे संस्कार गीत होय, चाहे ऋतु गीत, श्रम गीत होयया भक्ति गीत या निरगुन। सुनतै जेहन मे उतरि जालै। एही से ओनसे अपनइयत कै भाव बनल रहैला।

अंत मे एक बात कहल चाहिला कि जे आपन बोली, आपन भाषा, आपन संस्कार आपन परम्परा छोड़ि देही ऊ अपनन से कट जाई, छंट जाई। एतनै नाही बिना कुछ कइलै ऊ अपनन से हट जाई। एह से आज ई जरूरी हौ कि समय के संगे चलत अपने के अपने मूल से जोड़ले रहै कै जरूरत हौ। ऊ आपन बुनियाद हौ। ओही से अपनन कै पहिचान हौ। सच कहा त उहै आधार हौ। आधार से अलग भइले पर अदिमी कहीं कै न रह जाई। एहसे ओके बचाय के, जोगाय के सहेजले रहै के होई। एतनै नाही अपने के भी ओसे जोड़ के रक्खै के होई, तब्बै बात बनी। ई कहावत धियान मे हमेसा रहै –

आपन बोली आपन गाँव
कबों न छोडै आपन ठाँव
जे दिहलस एके बिसराय
ओकर मूलै गइल बिलाय

बस एसे बेसी कुछहू नाहीं।

❑❑

वाराणसी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

पंडित हरिराम द्विवेदी होखला के माने मतलब

पंडित हरिराम द्विवेदी से हमार रिस्ता 12 पीढ़ी पुरान ह। कांतिथ के परवा गाँव से आइल कश्यप गोत्रीय 3 भाईन के एगो परिवार में से एक भाई के खानदान से उहाँ के बानी आ दोसरा भाई के खानदान से हमनी बानी। उहाँ के 9 वीं पीढ़ी में बाड़ें आ हम 10 वीं पीढ़ी में। माने ठसक के संगे दयादी बा आ उ अजुवो जियल जा रहल बा।

लोकजीवन आउर लोक संस्कृति के कतौ जब बात होखे लागेला, त चाहे–अनचाहे लोककवि लोगन के भुलाइल संभव ना हो पवेला।भोजपुरिया जगत मे अनगिनत लोककवि भइल बाड़ें, जेकर कहल–सुनल गीत–कविता लोककंठ मे रचल–बसल बाटे। पीढ़ी दर पीढ़ी चलल आवत संस्कार गीत एही के उदाहरण बाड़ी सन। भोजपुरिया समाज मे एह घरी लोककवि के बात करल जाव त कुछ नाँव तेजी से सोझा उपरि आव. लन। अइसने एगो नाँव पं. हरिराम द्विवेदी जी के बाटे। आजु जीयत–जागत, बोलत–बतियावत, सबके दुख से दुखी आउर दोसरा के सुख मे आपन सुख महसूसे वाला लोककवि पं. हरिराम द्वि वेदी जी अब हमनी के बीच में नइखी बाकिर उहाँ के ईयाद,दीहल सीख आ नेह मन में जस के तस बसल बा। लइकइयँ से खेती–किसानी वाले रेडियो प्रसारन मे सुनल–जानल नाँव "हरि भइया" कई पीढ़ी के "हरि भइया" रहनी । भोजपुरी के गीत ऋषि आ करीब 4 पीढ़ी के हरि भइया मने पंडित हरिराम द्विवेदी भोजपुरी लोक के,लोक परंपरा के, लोक धुन के जवन ग्यान राखत रहलें, तवन अउर कतों भेंटल मोसकिल ह। अपना वोही ग्यान के पूरे मनोयोग से भोजपुरी जगत के सोझा परोसे के जवन ललक पंडित हरीराम द्विवेदी भीरी रहे, सराहे जोग बा। भोजपुरी के सभेले बड़हन थाती भोजपुरी

ओही लोकगीतन के लोक जीवन के अयना माने वाला पंडित हरिराम द्विवेदी जी के जनम मिरजापुर जिला के शेरवाँ गाँव में पंडित शुकदेव जी के इहाँ 12 मार्च 1936 भइल रहल। प्रारम्भिक शिक्षा चकिया से भइल। सेरवाँ से पैदले रोज चकिया आ के पढ़ाई कइल आ फेरु पैदले गावें गइल, इहे लइकइयाँ के शगल रहल। ओह घरी गांवन में मनोरंजन के साधन गीत–गवनई, रमायन बांचल आ गावल रहे। माई के दुलरूआ रहला का वजह से कवनों बार–बरात,छठी–बरही भा गाँव के मेहरारून के कवनों जुटान में माई के संगे जात–जात लोक संगीत के जवान घुट्टी पियलें ओही के अभियो ले लोक के लउटा रहल बाड़ें। फिर स्नातक आ बी एड काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आ स्नाकोत्तर काशी विद्यापीठ से भइल। 1965 में आकाशवाणी इलाहाबाद में नोकरी शुरू भइल। जवन 30 बरिस तक चलल। 1994 में आकाशवाणी से सेवा निवृत्ति का बाद बनारस मोतीझील इलाका के अजमल गढ़ पैलेस में रहत रहलें। देश विदेश के काव्य मंचन काव्य पाठ क चुकल पंडित हरिराम द्विवेदी बहुत सहज सोभाव के मनई रहलें। एही से अपना एगो आलेख में उनुका के डॉ बलभद्र मोह के कवि कहले बाड़न। डॉ बलभद्र कह रहल बाड़े –

''द्विवेदी जी 'मोह' की तरफदारी के कवि हैं। आसक्ति के कवि हैं, बंधन के स्वीकार के कवि हैं। यह नेह–नातों का बंधन है। अपने 'आत्म' को सदा मुक्त र खने के हिमायती हैं। आसरा की ज्योति जिन नयनों में बसती है वह नयन न भींगे और यदि नयन जो भींग भी जाए तो नयनों में पलने वाले सपने न भींगे। किसको बचाए भीगने से इस द्वंद्व के बीच एक निवे. दन–

"बसै जहवाँ असरवा के जोति नयनवाँ न भींजइ हो
चाहे भींजै त भींजै नयनवाँ सपनवां न भींजइ हो।"

हरिराम जी से यह गीत सुनने का अपना आनंद है। आज की तारीख में जब आदमी–आदमी के बीच नेह–नातों के लिए जगह कम होती जा रही है, हरिराम जी के गीतों को सुनते हुए हृदय प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। हम केवल स्मृतियों में ही नहीं जाते, अपने वर्तमान को भी टटोलते हैं। इन गीतों को सुनना, गुनगुनाना खोये को पाने और पाये को बचाने को सोचने जैसा है। खुद को गुनगुनाने जैसा। 'मोह' को स्पेस देने जैसा।''

भोजपुरी साहित्य सरिता उहाँ के ऊपर 2018 में एगो विशेषांक लेके आ चुकल बा, जवना के अतिथि सम्पादन प्रो सदानंद शाही आ डॉ प्रकाश उदय रहल.। अपने ओही संपादकीय में प्रो सदानंद शाही पंडित हरिराम द्विवेदी के भोजपुरी के हीरामन बतवले बाड़न। ऊहवें डॉ प्रकाश उदय कह रहल बाड़ें कि हरिराम द्वि वेदी के बात होखे आ नाको घुसावे के मोका भेंटा जाव , त हम उ मोका ना छोडल चाहीले, फिर भोजपुरी साहित्य सरिता के हरिराम द्विवेदी विशेषांक के अतिथि संपादक होखला के सुख कइसे छोड़ देहित। डॉ प्रकाश उदय उहाँ के चर्चित किताबि ' हे देखा हो' के अपने भूमिका में कहले बाड़न–

"हरि भइया के ई जवन बहुवस्तुपरसी प्रतिभा बा तवन इहाँ–उहाँ–जहाँ–तहाँ त बड़ले बा, तहँवा त जइसे उपट परत बा जहँवा ऊ अपना अगल–बगल के बिलोप भइल चीजन के चिंता में परत बाड़े! अंबार लेखा लाग जाता अइसन चित्रन के जवनन के बुला अब चित्रने में रह जाय के बा– सारी, घोड़सारी, चरनी, अहरी, नाद, नाधा, जुआ, हरिस, हर, पलिहर, खराई, कोठिला, कुंडा, छोण, ।"(हे देखा हो!)।

पंडित हरिराम द्विवेदी से हमार पहिल भेंट 2017 में बनारस के एगो कवि गोष्ठी में भइल रहे, जहवाँ उनके सुने आ कुछ आपन सुनावे के सुखद पल भेंटल रहल। ओकरा बाद त कई बेर उनकर नेह आ आशीष पावे के पल भेंटाइल। हर बेर पहिले से जेयादा आपन लगले पंडित हरिराम द्विवेदी। सुरुवे में हम दयादी के बात बतवनी ह, उहाँ के हमार बड़का बाबूजी बानी बाकि हम उहाँ के बाबूजी कहि के बोलीले।

उहाँ के भोजपुरी कृतियन के बात कइल जाव त पानी कहै कहानी,नदियो गइल दुबराय,जीवन दायिनी गंगा,बैन फकीरा, पातरि पीर, हे देखा हो,लोक गीतिका, अँगनइया, साँई भजनावली आदि बाड़ी सन।

पंडित हरिराम द्विवेदी साहित्य अकादमी के भाषा सम्मान, विश्व भोजपुरी सम्मेलन से 'सेतु सम्मान' हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश से राहुल सांस्कृत्यायन सम्मान, बांकेराम तिवारी समाज रत्न पुरस्कार, साहित्य सारस्वत,संबोधि सम्मान ,लोक पुरुष सम्मान, विद्या निवास मिश्र लोक कवि सम्मान, साहित्य भूषण , पुरबिया गौरव लोक ऋषि,यू पी रत्न सम्मान, डॉ मो. हन लाल तिवारी स्मृति सम्मान,निगार ए बनारस जइसन अनेकन सम्मानन से आ अनेकन मंचन से सम्मानित भइल बानी।

उनुकर एगो गीत जवन हमरा मन के झकझोरेले,उ भोजपुरियत आ लोक संस्कार के बचावे के खाति बा,संजोग से पहिल बेर हमारा उनुही से सुने के मिलल–

"अयना मे अंजोरिया बसाय रखिह
ओके सगरी उमिरिया जोगाय रखिह
रहि न पावे अन्हरिया कतौ मितवा
अंगनइया मे दीयना जराय रखिह"

पंडित हरिराम द्विवेदी जइसन व्यक्तित्व पर 1000–2000 शब्दन में ना कुछ कहल जा सकेला ना उनुका मूल्यांकन संभव बा। बाकिर एगो अपनइत का चलते ई एगो गिलहरी परयास लेखा बा। ख्याति प्राप्त वयोवृद्ध कवि आ साहित्यकार पंडित हरिराम द्विवेदी जी अब हमनी का बीच नइखी । सोमार 8 जनवरी 2024 के उहां के अपना महमूरगंज मोती झील स्थित आवास पर अन्तिम सांस लिहनी। एह बाति के संगे हम अपने बाति के बिराम दे रहल बानी आ उहाँ के नमन करत आपन शब्दांजलीं दे रहल बानी।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

स्मृति में बसल गाँव के कहानी के बहाने लोक-संस्कृति आ जिनिगी के बयान

कनक किशोर

दो पल अतीत के (मेरा भी एक गाँव है) हरेराम त्रिपाठी ' चेतन ' के हिन्दी में सद्य प्रकाशित पुस्तक जब हाथे आइल त ई जान के खुशी भइल कि एह संस्मरणात्मक कथेतर गद्य के माध्यम से एगो विद्वान भोजपुरिया आ उनुकर गाँव के नजदीक से समझे बूझे के मिली।दू दिन में किताब एक लगातार पढ़ गइला के बाद ई देखे के मिलल कि किताब भले ई हिन्दी में बा बाकिर पन्ना – पन्ना में भोजपुरी के सुगंध बिखरल बा।ई किताब अगर भोजपुरी में रहित त भोजपुरी साहित्य खातिर एगो धरोहर साबित होखित ई हम बिसवास के साथ कह सकत बानीं।इहे देख के हम एह किताब पर आपन बात भोजपुरी में रख रहल बानीं। चेतन जी पर कुछ लिखे जात बानीं त मन दउड़ के ओह स्मृति वन में चल जात बा जे उहां आ उहां के गाँव के बारे में पहिलहूं उहां के मुँह से सुने आ कुछ सानिध्य में देखे के मिलल बा। संस्मरण यथार्थ के जतने नजदीक होला ओतने सुंदर आ जीवंत बन पावला।पचासी बरिस के जिनिगी के स्मृति वन में इयाद के जमीन पर कतहूं – कतहूं काई जाम जाला।समय के बहत बयार से बतिआवत कतहूं हरियर दूब त कतहूं जंगल झाड़ उग आवेला। ओकरा के उतकेर – खोद – धो के चमकत चट्टान के नियर करि इयादन के बटोर रख देल सबके बस के बात ना ह। ई काम के अंजाम देल चेतन जी जइसन साहित्य साधक से संभव बा ई बात हम एह से कह रहल बानी कि समय के सब सरहद के पार करि धीरे–धीरे स्मृति वन में टहलत लोक संस्कृति आ माटी से जुड़ल तथ्यन के बटोरत ओकरा के ठीक ओही रूप में शब्दन में बान्हि के ओसहीं रखल जइसन सोच आ चिंतन के एकाग्रता के क्षण में उहां के भीतर ओकर सुनर बिंब बनल बा एगो कठिन काम ह। चेतन जी कवनो आलेख असहीं ना लिखींना ओह में डूब के बड़ी बारीकी से बिचार करके गझिन बुनावट में पाठक के सामने रखींना जेकरा से गुजरला पर पाठक के लागेला कि आँखिन के आगे फिल्म चल रहल बा।एह संकलन में गाँव, जवार, गंगा, परिवार, विद्यालय,खेत– बधार, बाग – बगईचा, जीयल जिनिगी आपने ना ईया – बाबा, गोतिया – देयाद,काकी – फुआ, चाचा – भइया, वैद्य – डाक्टर आदि सबके बड़ा सहियार के रखल गइल बा जे अप. ना के पाठक से अइसन जोड़ लेता जइसे ओकरा में वर्णित ढेर घटनन ओकरो जिनिगी से जुड़ल रहल बा। जिनिगी के साथ सुख – दुख, धूप – छांव, ऊंच – नीच कदम मिला के चलेला रचनाकार एह गहिर अनुभूति के बड़ा नजदीक से अनुभव कइले बाड़े बाकिर हमनी के हतास कहीं नइखे लउकत एह संस्मरणात्मक आलेख में। विपरीत समय में, संघर्ष के समय, समय के साथ धर्य धारण कर बढ़त रखे के सीख देत नजर आवत बा। चेतन जी के व्यक्तित्व के प्रभाव उहां के लेखन पर देखे के मिलेला। भीड़ों में दूर से चमकत चौड़ा माथ, ब्रासलेट धोती पर मटका के कुर्ता,खिलल – खिलल चेहरा जेकरा कवनो कोना में शिकन ना लउके,कुल मिलाके एगो प्रफुल्ल आत्मविश्वास से लबरेज जिंदादिल इंसान जेकरा होंठ पर मुस्कान खेलत रहेला आ उदासी कोसों दूर, उहें जस उहां के कृतित्वों में नाकारात्मक के जल्दी जगह ना मिले।ऊ एह संकलन में लउकत बा।

मुक्तिबोध एक जगह आपन कविता में कहले बाड़े कि हमनी का तमाम लोगिन के चिंता करींला जा, तमाम चीजन में उझराईल रहींला जा जेकरा कारण नजदीक के आत्मीय लोग छूट जाला। बाकिर एह संकलन से गुजरला पर ई कमी कतहूं महसूस नइखे होत।गाँव के छोट – बड़ सभको के समेटले बानीं लेखक एह संकलन में। अउर त अउर ई किताब समर्पित बा गाँव के सभ जातियन के पुरखन के,जे लेखक के गाँव के लोगिन से जुड़ाव आ प्रेम के परिचायक बा। संस्मरण की दुनिया में एह सब ठोस इंसानी तत्व के रहला से ओकर विश्वसनीयता आ प्रमाणिकता बढ़ जाला। बात प्रमाणिकता के आइल बा त बतावत चलीं कि एह संकलन में रखल एतिहासिक भा सामाजिक बातन के सप्रमाण रचनाकार रखले बानीं। संकलन हो चाहे व्यक्तिगत साक्षात्कार लेखक वैचारिक असहमति के प्रकट करे में कबो हिचकिचाले ना उहो बिना मलिनता आ वैमनस्य के।सत्य के सामने रखे में लेखक कबो पीछे ना रहीं ई संकलन में वर्णित अनेकन घटना एकरा के प्रमाणित करत बा। लेखक के गाँव आ जिनिगी के कहानी से गुजरला के बाद मस्ती भरल जिंदगी जीयल, घुल–मिल के,रम के चीजन,घटनन, दुनिया आ लोगिन के जीयल का होला ई लेखक के जिनिगी के कहानी खुद बखान कर रहल बा जे पाठकों के जिनिगी के राह आसान करे में, बहुत कुछ सिखावे खातिर नया

राहि सामने रखे में सफल बा। निराला जेकर आदर्श कवि हवे ओह व्यक्तित्व के कहानी ह ई संकलन। कहे के माने बिना अकड़ के फक्कड़ के जिनिगी के कहानी ह ई संकलन ' दो पल अतीत के '।

एह संकलन में रचनाकार संजीदा होके आपन जिनिगी के सब दुख – सुख, दरद, उलझन आ परेशानी के एह तरह से परोसले बानीं कि लागत बा कि आपन जिनिगी के एक – एक रेशा खोलि के पाठक भीरी रख देल चाहत बानीं।एकर उद्देश्य इहे बा कि आज आदिमी ओह मजबूरियन के समझ सके जेकरा बीच जीये पड़ रहल बा वर्तमान में। जिनिगी के डहर में कहर भरल रहेला।कहर तुड़े के भरसक कोशिश करेला जिनिगी बाकिर कुछ लोग टूट के बिखर जाला, कुछ लोग कहर के भंवर में फँस कतहूं के ना रह पावे बाकिर चेतन जी जस जीव कहर से संघर्ष कर चमक के सामने आ आपन राह खुद बनावेला ई उहां के जिनिगी के कहानी बयान कर रहल बा एह संकलन में। संपन्न परिवार में जनमल,ठाठ के जिनिगी जीयत रचनाकार के शारीरिक आ आर्थिक दूनों थपेड़ा बेर – बेर तुड़े के कोशिश कइले बा बाकिर चेतन जी रूप बदल नया रूप में सामने अइनीं दुनिया के ई बतावत कि हम जंगम ना हईं चेतन हईं।एकरो पर जिनिगी के राह में आर्थिक विवशता मजबूत दीवार बन खड़ा होके अजबे तस्वीर पेश कइलस कि प्राध्यापकी छोड़ि छोट – मोट काम कर आपन खर्च जुटावे के बाध्य भइनीं। बाकिर जवन काम कइनीं मन से कइनीं। एह तमाम विघ्न वाधा के बावजूद साहित्य लेखन बाधित जरूर भइल बाकिर रूकल ना जेकर नतीजा रहल कि हिन्दी आ भोजपुरी के पचास से अधिक कृति हमनी बीच दे पवनी आ आजुवो सृजनशीलता में कवनो कमी नइखे आइल। संकलन से ई बातों सामने आवत बा कि रचनाकार के जिजीविषा आ साहित्य सृजनशीलता वर्तमानो में अपना राहि डेगरगर बढ़ि रहल बा। चेतन जी के रोबदार आवाज, चमकदार चेहरा, आबदार आँखि आ माथ पर फर वाली टोपी कह रहल बा कि उहां के लेखन के दुनिया में अबहीं बहुत कुछ देवे के बा। ' दो पल अतीत के ' चेतन जी के गाँव खाली चारघाट के कहानी ना ह ई आचार्य चेतन के आपन जिनिगी ह, लोकाचार आ लोक संस्कृति के बखान ह, माटी के पहचान ह,कुल गोत्र के उड़ान ह, गंगा के नहान ह, शाहाबाद आ चेरो खेरवार के इतिहास ह,जे सांच पूछीं तऽ कहानी से बढ़के रोमांचक, यथार्थ आ जिंदादिली से भरपूर कहानी ह। जेकरा भीतर करूणा बहत, अपनईती के सोत फूटत, प्रेम के जोत जरत, नेह के उफान उठत त मिलते बा साथे सोरह संस्कार,वेद – पुराण, उपनिषद के ज्ञान भेंटाता। आचार्य चेतन त बड़हन हइये हईं, बहुत बड़हन एकर सबूत बा ' मेरा भी एक गाँव है ' के कहानी चेतन जी के जुबानी।

' दो पल अतीत के ' (मेरा भी एक गाँव है) दो खण्ड में बंटल बा। खण्ड एक में ' मेरा भी एक गाँव है ' , में लेखक के गाँव चारघाट के साथे शाहाबाद के इतिहास आ भूगोल प्रमाण के साथ देल गइल बा। खण्ड दू ' दो पल अतीत के ' लेखक के कुल – गोत्र, जीवनी,गाँव के पूर्व आ वर्तमान के हाल के विस्तार से वर्णन कइल गइल बा जे खाली चारघाट के कहानी ना ह,ओह सब गाँव आ गंवई के कहानी ह जे माटी से जुड़ कतहूं रहला पर गाँव से अलग नइखे हो पावत आ सांस – सांस में गाँव के बसवले रहत बा। पहिला खण्ड के शुरुआत गाँव आ ग्राम शब्द के उत्पत्ति,गंवई के अर्थ से भइल बा। जेकरा में उल्लेख बा कि सबसे पहिले पुर आ ग्राम शब्द के प्रयोग आ गाँव के अर्थ में उल्लेख ऋग्वेद आ अथर्ववेद में भइल बा। जेकर संपुष्टि ओह वेदन के मण्डल आ सूक्तन के साथ कइल गइल बा।गाँव के वैदिक कालीन संरचना की अवधारणा के बड़ा सुक्ष्म विष्लेषण लेखक प्रस्तुत कइले बाड़ें जेकरा में पारिवारिक ईकाई के गठन,गार्हपत्य संस्कृति के विकास आ गाँव के संरचनात्मक गठन पर विचार कइल गइल बा। बदलत परिवेश में हजारों वर्ष से निर्मित पारिवारिक अउर गाँव के सामुहिक काया जे सामाजिक संवेदना के डोरी से बन्हाइल रहे काहे ढील पड़ रहल बा, टूट रहल बा एह पर लेखक चिंतित बाडें तब त कहत बाड़ें कि के गाँवन के साहचर्य रस के सोखके,कवना कारण बंजर बना रहल बा? परदेश पलायन चाहे रोजगार खातिर होखे भा बेटी के ससुराल जाये के कारण ऊ दुखद होला, भीतर से तुड़ देला आदमी के।लेखक बड़ा सुक्ष्म दृष्टि गाँव के छोट – छोट बात पर रखत अपना स्मृति के झोली से निकाल पाठक भी रखे के हरसंभव कोशिश कइले बाड़ें। पलायन पर लेखक के शब्द देखल जा सकेला –

' परदेश की यात्रा करने वाले व्यक्ति को अपना गाँव छोड़ते समय कितना दुख होता है?गाँव के सिवान पर लोटा के पानी के साथ सिर पर गमछा रखे, कुल्ला करते और पानी पीते समय गाँव छूटने की जो कसक उठती है, उसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य,गाँव के यार – दोस्त ही नहीं पूरे गाँव का पानी छूटता है – कशमशाता है।'

गवने, ससुराल विदा होत बेटी के
रोआई पूरा गाँव के आँखिन के गिला कर
देला।गाँव के सबकुछ सभकर होला।ई समष्टि के
भाव,

लोक चेतना, संवेदना के छलक गाँव में दिखाई पड़ेला।इहे देख कहल गइल होई कि गाँव में भारत के आत्मा के वास होखेला।इहो सांच ह कि गाँव के समझला बिना भारत के लोक संस्कृति के ना समझल जा सके। बाकिर गांवन से गंवई संवेदना के बिलात देख लेखक के करेजा में टीस उठत बा आ कलम उठा कह दे रहल बा कि –

'' कुनह – कलह बाटे,कहसुन दाह बाटे,
आँखिन के सहबा, ना सुलह घरे – घरे।
आँखि चले,मुँह चले, भँहू मगरूर चले,
ओठन के, ठोठ के गरूर बा घरे – घरे।
सुनुगे ना चूल्हा – आगि,आगि सुनुगावे सभे,
आगि – घीव स्वाहा के उचार बा घरे – घरे।
कतना तितिमा, लाई लावेली पड़ोसिन ऊ
लँगो–चँगो, लाता–लुती – मार बा घरे– घरे।''

खाली गाँव आ घरे नइखे बदलत।गाँव के रहन –सहन आ प्रकृति में जगह–जगह बदलाव नजर आवत बा जेकरा के रचयिता के शब्द में देखीं –

'' साईं,कोदो,टँगुनी ना मकई बोआता खेते
कल्हू में ना तीसी, बर्रे, सरसों पेरत गाँव।
बानी नाहिं गावे, सुने आल्हा ना आषढ़वा में
काने डाली अँगुरी ना दोल्हवा पारता गाँव।
धान के कुटाई, चाहे लाट्टा के कुटाई,
सैफ, बाना अरू गदका ना मूँगरा फेरता गाँव।''

लेखक गाँव के बदलत रूप से,बदलत गँवई संवेदना से चिंतित त बड़ले बा बाकिर बिगड़ल प्रकृति आ प्रर्यावरण के देख चुप नइखे रह पावत तब त कहत बा कि –

'' सूखल इनार रोवे, नदी के किनार रोवे,
आम,फुलवार,बंसवार नैन ढारे लोर।
बर, बड़हर, कटहर ना गूलर, तोंत
कहाँ बैठो कोइल आ कहाँ सुग्गा मारे ठोर?
फुदगुदी, तितर, बटेर सपना के बात,
माथ पीटि रोवे चुहचुहिया के बिना भोर।
प्रकृति – सिंगार के उजारि गाँव बेसरम,
बोवत अन्हार मूढ़, खोजत फिर अंजोर।।

ई गाँव के चिंता वर्तमान के वैश्विक चिंता बन सामने खड़ा बा।पूरा विश्व त्राहि–त्राहि कर रहल बाकिर हमनी का विकास रथ पर चढ़े के चक्कर में प्रकृति के दोहन से बाज नइखी जा आवत। लेखक एह बातन के,पुरान स्मृतियन के कुरेदले बानीं एह संकलन में एकरा पीछे गाँव , परिवार आ अपना के साथे पुरनिया लोगिन के धरोहर स्मृति के दोहरावे के चाह बा जे खाली रचयिता के थाती ना ह, हमनियो के थाती है जे समय के धूर – गरदा से ओझल हो गइल बा बाकिर अपने खातिर ना भविष्य के पीढ़ी खातिर एह थाती के गाती अप. ना गरदन में लपेटे के होखी जे गाँव आ देश हित में बा।आज राजनीति विचारधारा के नया – नया गढ़ बनावल जात बा, जाति के दुर्ग खड़ा कइल जात बा,पंथ–मजहब के किला पर चढ़ि अजान देल जात बा जे लोक के मंगल सत्ता के ,श्रम अउर प्रतिभा के निर्दय– भाव से, प्रेम आ संवेदना के कुचल रहल बा।पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ६ दिसंबर १९५३ को जगदीश चन्द्र माथुर के पत्र लि खले रहन – [we worship the political power knowing in our heart of hearts that it is purely temporary] ओहि राजनीति के विकास पथ पर दउड़त विचारधारा लोक के गाँव से दूर कर रहल बा एह षड्यंत्र के समझियो के मनई नइखे समझ पावत।ई संकलन में पाठक के एहू से रूबरू होखे के मिलत बा।

संस्कृति के बिना सामाजिक जीवन के कल्पना असंभव बा अउर परम्परा ना होखत त आदमी अबहियो पशु जस जिनगी जीयत रहित । तबहूं आजुवो कुछ लोग संस्कृति और परम्परा के विरुद्ध बोले से बाज ना आवे। अइसना में जीवन की समग्रता में परिभाषित करके केहू बतलावे कि परम्परा और संस्कृति से दूर होत गइला पर सामाजिक, पारिवारिक ,गाँव आ समष्टि के संरचना ध्वस्त हो जाई, इहे कोशिश कइल गइल बा चेतन जी द्वारा एह संकलन अपना आ आपन गाँव के अतीत में झांक के। संकलन के रचयिता के गांव ह ' चारघाट '। अपना गाँव चारघाट के इतिहास के खोज में शाहाबाद जिला के इतिहास रचनाकार सप्रमाण खंघरले बानीं एह संकलन में काहे कि शाहाबाद के इतिहास के गर्भ में ' चारघाट ' के रहस्य छिपल बा। एह खातिर उहां के ईशा पूर्व पाँचवी शताब्दी के शुरू से शाहाबाद जनपद के इतिहास पर नजर डलले बानीं।ई शाहाबाद जनपद के एतिहासिक पृष्ठभूमि पाठक के विशेषकर शाहाबाद जनपद के लोगिन के आपन इतिहास जाने के मौका प्रदान करे में बहुत सहायक बा। लेखक खुद स्वीकार कइले बानीं एह संकलन में कि पंद्रह सई बरिस के इतिहास के जोगाड़ करे में पंद्रह बरिस समय के साथे पचास – साठ हजार रूपेया व्यय कइले बानीं। एहिजा समय आ पइसा के बात नइखे,ई रचयिता के जुनून के परिचायक बा कि आपन गाँव के पहचान खातिर अइसन श्रमसाध्य काम में हाथ लगवनीं। चारघाट

गाँव खातिर ई भागीरथी काम चेतन जी के बस के काम रहे दोसरा के बस के ना। उहां के तकलीफो बा कि गाँव में अनेकन सूझ – बूझ वाला लोग आ परिवा. रो में विद्वान रहला के बावजूद काहे ना केहू के चेतना गाँव के अतीत, गाँव के भौगोलिक मन्थन आ ओकर इतिहास का ओर गइल ? तब सवाल उठत बा ई काहे खातिर? सवाल इहो सामने आवत बा कि सं. कलन के रचनाकार एह खातिर काहे व्यथित बाड़ें आ का सोच एह श्रमसाध्य काम में अपना के लगवले ? जबाब पड़ताल करे के जरूरत नइखे। संकलन एकर जबाब अपना में समेटले बा। लेखक कह रहल बाड़ें कि गाँव आपन रोपल – उपजावल प्रकृति पर मोहित रहेला। ओकरा अपना भीतर फैलल सामाजिक सांस्कृतिक अन्हार ना लउके।एह काम के दायित्व गाँव के चेतनशील मनई के ह कि सामाजिक आ मनुष्यता के मूल के पड़ताल करि गाँव के धुमिल होत चित्र – चरित्र के पहचान कर पारंपरिक आ सांस्कृतिक मूल्यन के स्थापना खातिर आगे बढ़े। असहीं गाँव के मूल क्षितिज के खोजो के दायित्व ओहि लोगिन के ह।इहे दायित्व के आपन कान्हि पर लेके लेखक आगे बढ़बे ना कइनीं बलुक आपन गाँव के मूल के,नींव के तलास करि हम पाठकन भीरी रख देनीं ' मेरा भी एक गाँव है ' के रूप में।

इतिहास संस्कृति, परंपरा, विरासत के धरोहर होला। अपना के, आपन माटी के, आपन परिवार समाज के, आपन गाँव आ जनपद के जानकारी बिना इतिहास के खंघरले संभव ना हो पावे।समय के धूर गरदा बहुत कुछ छिपा के रखेला जे इतिहास से ओझल ना हो पावे। साहित्य में इतिहास के घोलमेल ओकर रोचकता बढ़ा देला।एही से साहित्य इतिहास की पीछा ना छोड़े। परंपरा, संस्कृति, विरासत के ज्ञान के बिना आपन जड़ के पहचान संभव ना होखे।इहे कारण बा लेखक अपना जनपद के इतिहास के जड़ खोदि आपन गाँव के इतिहास भूगोल एह संकलन के माध्यम से हमनीं बीच रखनीं।एह संकलन के बहाने शाहाबाद के बड़ा रोचक इतिहास सामने आवत बा आ इहो सामने आवत बा कि आज के धान के कटोरा काल्हु के घनघोर जंगल रहे। शाहाबाद जनपद के इतिहास पर नजर डलला से ई बात सामने आवत बा कि ई. सन ४६६ से शाहाबाद जिला पर चेरो वंश के जनजाति के आधिपत्य रहे।'' तवारीख – ए– उज्जेनियाँ '' जेकर लेखक डुमरांव राज के मुंशी विनायक प्रसाद रहन में लिखल बा कि – बनारस से पूरब, पटना आ बिहार से पछिम,गंगा से दखिन आ विन्ध पर्वत से उत्तर के क्षेत्र में चेरो जाति के आबादी ढेर रहे। जंगली जातियन के ई मुख्य स्थान रहे आ इहे लोग एह जगहन पर राजा आ जमींदार रहे।समुचा शाहाबाद जनपद में सात गो भयानक जंगल रहे जेह में दिनों में जंगली जानवरन के आतंक रहे। बाद में उज्जैन लोग आइल जेकर पहिला राजधानी बिक्रमगंज के भीरी कुरुर में बनल रहे।किला के अवशेष अबहियो ओहिजा बा जहाँ लेखक दू दिन रहे विस्तार से छानबीन कइले।ओह किला के उपरी भाग में एगो करिया पत्थर बा जे बराबर बढ़त रहेला।कुरुर के पहिला राजा संतन शाही रहन।इहे उज्जैन वंश चेरो के युद्ध में हराके आपन आधिपत्य स्थापित कइलस। चेरो राजा के चार जगह राजधानी रहे।चेरो वंश के कद – काठी,रहन – सहन, काम – काज, खान – पान, औजार – हथियार, विधि – व्यवस्था,कर वसुली के तरीका आदि सबके वर्णन बड़ा सुक्ष्म ढंग से सं. कलन में मिलत बा। राजा हुंकार शाही के साथ युद्ध में करीब दस हजार चेरो मारल गइलन आ जे बांचल से जहां – तहां छुप के रहे लागल। हुंकार शाही बिहिया के दखिन दावां जगल में आपन राजधानी बनवले जेकरा में आजुवो उज्जैन राजवंश परिवार रहेला। बिहिया के नजदीक चीरापुर के जंगल में चेरो के आधिपत्य रहे। हुंकार शाही कई बेर आक्रमण कइले बाकिर सफलता ना मिलल।सन १४२१ में उनके वंशज चेरो राजधानी बिहिया पर आक्रमण कर अपना कब्जा में कर लेलस तब चेरो खरवार जाके ' चेरोघाट ' में बस गइल। चेरोघाट बड़ा समृद्ध गाँव रहे।सन १६२१ तक छिटपुट छोड़ चेरो राज समाप्त हो गइल। चेरोघाट तबहूं आबाद रहे जेकरा के मुगल आक्रमण कर नेस्तनाबूद कर देलस। ओहि चेरोघाट में लेखक के कुल पुरुष कृष्ण तिवारी धतुरा, कुशीनगर से आकर बसलन ओह घरी ओहिजा खाली एगो बीन परिवार रहत रहे आ उहें के आपन घर बनवला के बाद गाँव के नाम रखनी ' चारघाट '। समय के साथ गाँव आपन विस्तृत रूप लेलस त सामाजिक समरसता में गिरावटो आइल। लेखक के मन ई देख कहत बा कि हम जवन गाँव के देखले आ जियल रहीं ओह गाँव के लोग के जीवन आ चरित्र केरा आ पियाज के छिलका जइसन ना रहे। सबके आपन जीवन मूल्य रहे, आपन नैतिकता रहे।गाँव के एगो सामूहिक आ सामासिक सुनर व्यक्तित्व रहे,श्रम आ पसेना के इज्जत करे वाला चेतना रहे।गाँव की पगड़ी के मान रखे वाला मानसिकता रहे। सभे रिसता के चादर ओढ़ि सूतत – जागत आ सीयत – जोगत रहे। सबके खून में गाँव बसत रहे आ करेजा में गाँव धड़कत रहे।जे अब बिलात जात बा।गाँव के पवित्रता हतास आ लोक चेतना रूखड़ात जात बा।विकास के घूंघट ओढ़ले पतन के देखि दरद होला। गाँव आ मनई दूनों मुरझा रहल बा, भीतर

से मर रहल बा।ओकरे नतीजा बा कि गाँव आ मनई के लोक चेतना, समष्टि के भाव, अपनइती के नेह बरदास्त के बाहर जाके आपन पांव चउकठ के बाहर रखे के बेताब बा। आपसी खुनस के ताला – चाभी लेले घूमत बा मनई सब स्नेह के भूला के अपनापन भयवधी के आँगन पर लागल दरवाजा के बन्द करे खातिर। अइसन काहे ? ई सोचे खातिर ई संकलन पाठक के बाध्य करत बा ।

गाँव एगो पाठशाला होला बिना किताब, कापी आ पेन के। बहुत कुछ सीखा जाला जे स्कूल कॉलेज में ना भेंटाय।जे सरेख सयान बना देला समय से पहिले।गाँव के गँवारो के बोल सुनि लागेला ई ज्ञान के बात कहवाँ सिखले हाईहन।गाँव के बुढ़ – पुरनिया अनुभव सिद्ध शिक्षक होखेलन।उन्हिन के कंठ से निकलल मुहावरा, लोकोक्ति के गूढ़ रहस्य कवनो वेद – उपनिषद के सुत्र से कम ना होखे।गाँव के मनई के जीवन यात्रा कवनो मार्ग दीपक से कम ना होखे।तवनो पर कहल गइल बा कि छानि के सुने के चाहीं आ घोरि के बोले के चाहीं। हरि अनंत हरि कथा अनंता के लेखा लेखक के गाँव, मनई,कुल – गोत्र, चेरो – खेरवार आ उज्जैन वंश के कहानी से भरल बा ई संकलन जे गाँव के बहाने लोक संस्कृति आ लोक चेतना पर बहुत बतकही करत खाड़ बा पाठक के सामने आ बेर – बेर कहत बा कि मूल से अलग जरूरत पड़े त जरूर होखीं बाकिर जड़ से कटि जनि।

' दो पल अतीत के ' खण्ड दू मुख्य रूप से लेखक के कुल – गोत्र, परिवार और लेखक के जीवनी से संबन्धित बा बाकिर प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप से गाँव से जुड़ल रहल बा।गाँव से अलग छिनगावल लेखक के संभव नइखे काहे कि लेखक के सांस में गाँव के वास बा। लेखक के कहानी से इहो बात सामने आवत बा कि बचपन से गाँव विद्या के प्राप्ति के कारण कई बेर छूटल बाकिर कारण कवनो होखे गाँव उहाँ के खींच के ले आइल अपना आगोश में।जब रोजी रोजगार के फेरा में गाँव छूटल त लेखक जहाँ रहले गँउवो के अपना साथे ले गइले कहे के माने गाँव कबो लेखक से दूर ना रह पावल ओकर प्रमाण के बयान ई संकलन कर रहल बा। असहीं संकलन से गुजरला पर इहो प्रमाणित होत बा कि लेखक मातृभाषा आ माटी से ओसहीं जुड़ल रह गइले जइसे गाँव से।एकर प्रमाण ई बा कि एह संकलन में उद्धृत अनेकन उदाहरण त भोजपुरी में बड़ले बा साथे हिन्दी वाक्यन में भोजपुरी शब्दन के उपस्थिति जगह – जगह पर बा। लेखक खुद कहत बाड़ें कि – '' कोई भी गाँव समय – संदर्भ का पुनर्वाचन करते रहता है। उसमें कई समूहों की आचार – विचार संबन्धी चेतात्मक ऐतिहासिक सन्निहितियां समय के साथ अग्रसर होती रहती हैं, जिससे गाँव का व्यक्ति – स्वत्व समूह की अस्मिता बन जाता है। प्रत्येक गाँव अपनी उलझी हुई जटिल काया में एक रचनात्मक अनुभूति होता है।गाँव कई – कई भावनात्मक एवं रागात्मक जमीनों पर एक ही काल में,एक साथ ही संचरण करता है और आश्चर्य होता है कि उसकी अन्तर्चेतना, ब्राह स्वभाव और समस्याओं से घुल मिल कर गतिशील रहती है।'' ई ऊ सच्चाई ह जे गाँव आ माटी से अलग ना होखे देवे एगो भीतर से जागृत मनई के आ इहे रूप संकलन में निखर के आवत बा लेखक के पाठकन के बीच। लेखक खुद कहत बाड़ें कि – '' मैं पूरे गाँव का हूँ, मेरी चेतना समूचे गाँव से लगाव रखती रही है।मेरा स्वत्व गाँव के समूचेपन में निवास करता है और सांस से दूर रहकर भी गाँव के अतीत, वर्तमान में ही गतिशील रहती है।'' लेखक के ई कथन लोकचेतना भा सर्वचेतना के परिचायक बा। अविभक्त चेतना के दर्शावत बा। संकलन में संकलित दूसर आलेखों लेखक के चरित्र के जाति चेतना, वर्ग चेतना, क्षेत्र चेतना, पंथ चेतना के संकीर्णता आ विभक्त चेतना के प्रश्रय देत नइखे मिलत। कहल गइल बा कि लोकचेतना प्रायोजित ना होखे।ऊ खुद पैदा होला आ झरना जस निर्झर झरत आ नदी जस बहत चलेला सामने आइल बाधा के हटावत, आपन राह बनावत। प्रभास जोशी के कहल ह कि इहे लोकचेतना भारत के अकूत ताकत ह।एह लोकचेतना में राजस – तामस के गंध ना आवे, ' मैं ' मर जाला अउर ' हम ' जिंदा होके व्यक्तित्व बन जाला।गाँवे ओह सामूहिक शक्ति के जन्मदाता ह जेकरा से जुड़ लेखक के तेज समष्टि के तेज बन आपन किरण बिखेरत उपस्थित बा एह संकलन में।कहलो गइल बा कि लोकवार्ता के अध्ययन के बेसिक रीडर गाँव आ गली ह जेकर दिशा आ प्रयोजन लोकचेतना ह। ओहि गाँव आ गली के कहानी ह ' अतीत के दो पल ', जेकरा में गाँव के गली वाला मनई बा जे माटी के माई, खेत – बधार के मंदिर आ कर्म के पूजा समझेला त विश्व चेतना के भाव के राग गावेवाला चेतनो जी बानीं जे गाँव से दूर स्वध्याय के तपोभूमि पर धूनी रमवले बानीं।आज जब पछेया बयार तेजी से बह रहल बा आ हमनिये के ना हमनी के जीवन दर्शन आ जीवन पद्धति ओकर चपेट में आ गइल बा। भाषा,कला,संगीतो ओकरा से अछूता नइखे रह गइल। नाता रिसता मुनाफा के बाजारवादी दर्शन पढ़ रहल बा त हमनी का इहो जानलीं जा कि बाजारवाद अकेला बना के मारेला।

खोजलो पर घाव पर मरहम लगावेवाला नजदीक ना लउके।एही से आजु लोकचेतना के महत्व बढ़ गइल बा, जेकरा के गाँव आ समष्टि भाव से जुड़के बचावल जा सकेला।इहे देख लेखक एग जगह कहत बाड़ें कि ' जब से देखनी शहरिया ए राम कल ना परे '।एह संकलन के गाँव के कहानी इहो सनेस दे रहल बा। आज के जमाना बा कि साहित्यकार आपन बड़प्पन गावते बजावत नइखन, थोप देत बाड़न कि 'मेरे साथ इतना बडा प्रकाशन है ,इतनी बडी कुर्सी है ,इतना बडा मीडिया है , इतना बडा पुरस्कार है , मेरे साहित्य पर शोध हो गयी है , मेरा गाँव, कूल गोत्र आदि–आदि।' उन्हिन लोगिन के शब्द के उन्हिन के आचरण से कवनो संबंध ना रहे आ ना उन्हिन के साहित्य के जनता से कवनो लेना–देना रहे ।जनता–जनता, गाँव – माटी त करेला लोग बाकिर गाँव – माटी – जनता से बहुत दूर रहके खाली कागजी आ जुबानी। अइसना में माटी – गाँव – मनई से जुड़ल चेतन जी के ई संकलन में गंवई गंध गुलाब के महक सुवासित करत मिलत बा।एह जमाना में चेतन जी जस साहित्यकार आचरण के सभ्यता सि खावत ई संकलन के साथ सामने आइल बानीं जे गाँव से पाठक के जोड़े में सफल बा।ना त आज के घरी केहू बतावे त कि आचरण से शब्द के केतना रिसता बांचल बा ई बतावे वाला के बा?

अइसे संकलन में गाँव आ लेखक से जुड़ल अनेकन घटना बा जेह पर विस्तार से बात करे के जरूरत बुझात बा बाकिर समीक्षा में सबके ना समेटल जा सके एकर सीमा के देखत। बाकिर कुछ पर बात कइला बिनु बतकही अधूरा रह जाई। अइसने एगो घटना लेखक के दस बरिस के उम्र में घटल रहे।ऊ घटना लेखक के देखल सपना से संबन्धित रहे जे बाद में सांच साबित भइल।एह घ टना के आलोक में लेखक सपना के बड़ा सूक्ष्म आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एह संकलन में कइले बाड़ें।इहाँ उल्लेख कइल उचित होखी कि हमरा संपादन में 'आपन आपन रामकहानी ' आत्मकथा संग्रह आइल रहे ओह संकलन में एह घटना आध ारित आत्मकथ्य ' दीया बुता गइल ' शीर्षक से शामिल भइल रहे। समय के गति बड़ी तेजी से बदलेला। बनारस प्रवास लेखक के आपन बना लेले रहे। लेखक कहत बाड़ें ओह काशी के प्रेम में –

मैं भी बना बनारस,बहने लगा अब।
गंग के तरंग,चढ़ी भंग नशा ज्ञान की।।

बाकिर प्रेम के साथ वियोगो जुड़ल रहेला।उहे वियोग लेखक के बनारस से विस्थापन के कारण बनल एगो गलत सिद्धांत से समझौता ना कइला के कारण। जे प्रोफेसर के नोकरी छोड़ा सेठ बना देलस लेखक के। बाकिर शब्द गंध अक्षरधाम के प्रेमी के व्यवसाय रास ना आइल आ लाके पटक देलस राँची, मोराबादी के स्वध्याय के प्रांगण में जे साहित्य तीर्थ बन आपन सुगंध बिखेर रहल बा झार खंड के वादी में। लेखक के शब्द से एह बात के पुष्टि होत बा। लेखक के शब्द – '' चक्रवाती लहरों और झंझावातों को झेलते हुए भी, कभी चौराहे पर अपने दर्द का इजहार नहीं किया। मैंने जीवन में जितना आम को चाहा, उतना ही महुआ,बेल,बेर,बाँस और बबूल से भी प्रीति की।संताप के घरौंदा में संवेदना को पालता रहा, संबन्ध के तिनकों की हमेशा से देख – भाल करता रहा – रेत में जीवन भर ठो. करें खाता रहा।आँखे डबडबाती रही और होंठों पर कनपटी का दबाव बना रहा।'' अउर वर्तमान पीढ़ी के उपलब्धि के देखत लेखक के शब्द –'' मैं उस किसान की तरह तृप्त हूँ जो अपने खेत में लहलह. ाती पन्नई फसल को देखकर आह्लादित और आनंदविभोर होता है '' – लेखक के तृप्ति अउर आत्मविभोरता के परिचायक बा उहां के ई बोल।

जिनिगी केकरो होखे,गाँव कवनो हो खे अन्हरिया आ अँजोरिया के खेल चलत रहेला। कहे के माने जिनिगी धूप, छांह,चाँदनी आ स्याह के सम्मिश्रण ह। मनई के जीवन एगो कविता ह जेकरा में जिनिगी के छोट – छोट अनुभवन से उपजल संवेदना बिखरल पड़ल रहेला। असहीं ' दो पल अतीत के '(मेरा भी एक गाँव है) लेखक के मन जगत के स्मृति वन में टहलत अभिव्यक्ति के संकलन ह। लेखक के अंदर रचल – बसल बरिसन के इयाद के दुनिया के खाका ह ई संकलन। सांच पूछीं तऽ ई चेतन जी जस संवेदनशील आ विचारशील मनई के जिनिगी में जहाँ – तहाँ बिखरल विविध रंगन से पाठकन के साक्षात्कार करावत बिया बिना लेखक के विद्वत्ता के धौंस जमवले।एह संकलन में लेखक आपन मन की बात, आपन सोच अउर समाज के प्रति आपन चिंता के बयान कइले बाड़ें। बाकिर ले खक के सोच नाकारात्मक कतहूं नइखे लउकत, सोच आ सपना में भोर के लाली बा, अंजोर के गीत बा। अविनाश चंद्र विद्यार्थी के शब्द में उहां के सोच आ सपना के शब्द देला पर कहे के पड़ी कि –

'' चह–चह बोल चुचूहिया बोली
जबदल कंठ मुरुगवा खोली
भँवरा पराती गाई, कली के मन मुसुकाई
आई, उहो दिन आई, अन्हरिया राति पराई।

डगर–डगर तब होई दल–फल
निसबद रही पाई ना जल–थल

जगरम घर–घर समाई, नगर में सोर सुनाई
आई, उहो दिन आई, अन्हरिया राति पराई।''
'

लेखक एह संकलन में ओह सवालन के गंभीरता से रे खांकित कइले बाड़ें जेकरा से गाँव, समाज आ मनई आज जूझ रहल बा। मौजूदा समाज के लोक संस्कृति आ लोक चेतना से बढ़त दूरी के देख आज के चलन पर प्रहार करे में पीछे नइखन लेखक।एह संकलन के भाषा सरल – सपाट आ शैली बिना लाग–लपेट के बा। लेखक के मातृभाषा भोजपुरी के स्वाद जगह–जगह मिलत बा जे संकलन के मिठास आ संप्रषणियता के बढ़ा रहल बा। कवनो विशेष बिंब – विधान के सहारा ना लेके रचयिता जे कहे के बा ओकरा के सीधा सरल रूप में कह डलले बाड़ें बिना दाँव – पेंच के। कथ्य का दृश्य – विधान संकलन के विशेषता बा जे बहुत कम दिखाई पड़ेला। प्रूफ में बहुत कम गलती, बढ़िया छपाई आ बढ़िया कलेवर में प्रस्तुति किताब के खूबसूरती बढ़ा रहल बा जेकरा खातिर श्री नर्मदा प्रकाशन, लखनऊ साधुवाद के पात्र बा।
बदलत समय आ गाँव के रूप संकलन में देख आपन शब्द के काव्य रूप देल चाहब त कहब कि –

गाँव से मनई परा जाई
सहर के खोज में शहर जाई
बाकिर शहर ना अपनाई
गाँव ना गाँवे रही
ना शहर बन पाई
चेतना विहीन मनई के आँख मनई के खोजी
बाकिर मनई ना भेंटाई
गाँव ना भेंटाई।
———————

संकलन में संकलित कथ्य
एह तरह के किताब
लोक संस्कृति के वर्णन
लोक चेतना के भावना
इयाद दिआई
आपन वजूद के सब निशान के
जे समय के साथ बिलात जा रहल बा गाँव से
मनई त खोजलो से ना मिली
एह से कहब कि पछेया के मुँह
पूरब देने फेरीं
आँखिन पर बान्हल करिया पट्टी हटाईं
अँजोरिया बढ़ी
आ अन्हरिया भागी राहि के
——————————

लेखक के अपना जिम्मेवारी के अहसास बा
ओकरा भीरी आपन धूप के टूकड़ों बा
बाकिर अकेला होखे के चिंता
ओकरा चेहरा पर नजर आवत बा
गाँव, गँवई आ मनई देख
चारों ओरि फैलल अन्हरिया के देख
ऊ आपन हिस्सा के धूप के टूकड़ा के
टुकी – टुकी करि बाँट देल चाहत बा
गाँव आ लोगिन के बीच
अपना जिम्मेवारी से मुक्त होखे खातिर
विभक्त चेतना के दूर करे खातिर।
——————————
हमहूं गोवाह बानीं
गंवई गंध गुलाब के
जे माटी से उठेला
खून आ सांस में बसेला
जे देखत – देखत आँखिन के सामने बिखर गइल
इहे कारण बा कि
गाँव घरे अइलो पर
सुकून नइखे भेंटात
सोचत बानीं माथे हाथ धरि तऽ
मन कहत बा कि गुनहगार सभे बा
साथे हमहूं।
——————————
गाँव आ मनई
संजीदा ना रहल
पत्थर बन गइल बा
ना जाने केकरा सराप से,
अहिल्या जस इंतजार बा
राम के
देखीं अनंत इंतजार के
कब अंत होला,
बिसवास बा
राम अइहन
उद्धार करिहन।
——————————
का रहीं हम?
का हो गइनीं?
गाँव आ मनई पूछ रहल बा
खुद से
देख रहल बा चेतन जी के ओरि कि
जागरण मंत्र दिहें
अन्हरिया भागी
भाग गंउवा के जागी
मनई मनई के देख ना भागी।
———————

अकेले होखला पर
अकेले ना होखे गाँव के लोग,
विदा होखलो पर
विदा ना होखे गाँव के मनई,
गाँव के मनई के आँखि
चेहरे पर ना होखे
दिल आ मनो में होखेला।
————————
गाँव के मनई हईं
खरीद फरोख्त ना जानी
घटल – बढ़ल रहेला
आपस में लेन देन चलेला
उधार पंईचा चलेला,
बाकिर पछेया बयार
बाजारवाद हमरो के
मुनाफा के पाठ पढ़ा
आँगन में बाजार लगा देलस।
————————
संकलन लेखक के जिनिगी के लेखन ना ह
लेखक लिखले बाड़ें
अन्हरिया आ अंजोरिया के बारे में
विकास के पथ आ सून गलीयन के बारे में
अपना जिनिगी के फिसलन आ उड़ान के बारे में
दूसरे के गोड़ के बिवाई आ हाथ में पड़ल घट्ठा के बारे में
गाँव के बारे में,जवार के बारे में
गंगा के बारे में,कटाव के बारे में
चेरो– खेरवार – उज्जैनियन के बारे में
शाहाबाद के बारे में आ अपना पुरखन के बारे में
एही में संकलित बा चारघाट के इतिहास
चेतन जी के विकास
लोक संस्कृति आ संस्कार के बखान
आ स्वध्याय के मकान
आ एही सब के बहाने आपन जीवन यात्रा के पुराण।

किताब के नाम – दो पल अतीत के
(मेरा भी एक गाँव है)
लेखक – हरेराम त्रिपाठी ' चेतन '
विधा – संस्मरणध जीवनी
पेपर बैक में मूल्य –450/–
प्रकाशक – श्री नर्मदा प्रकाशन, लखनऊ।

❑❑

❍ राँची, झारखंड
चलभाष – 9102246536

अजय साहनी

गजल

आज अपनो त साथ में नइखे ।।
ताज हमरा जे माथ में नइखे ।।

हर खुशी हो गइल हवा जइसन,
हाथ में रह के हाथ में नइखे।।

खेल बाटे भइल गगन के घर,
चांद पूनम के रात में नइखे ।।

भाग में गम सितम बहुत हमरा,
बूंद भर मय हयात में नइखे।।

सॉप हमहूँ हई मगर पनिया ,
के डरी?विष त दॉत में नइखे।।

जिंदगी के उदास बा माड़ो,
हाय! दुलहे बरात में नइखे ।।

2.

ऊ जिही जे इहॉ सयाना बा।।
हर जगह चोर के ठिकाना बा।।

हाय! विषधर बइठ गइल बाटे,
ऑख के सामने खजाना बा।।

सॉच एगो त कह गइल झूठा ,
आजकल झूठ के जमाना बा।।

बॅट गइल घर त बाप माई के,
छोड़ के पथ कवन ठिकाना बा।।

यार यारी बहुत दिखावत बा,
का ''अजय''से दुश्मनी पुराना बा।।

❑❑

❍ रोहिणी सेक्टर 7 नई दिल्ली

'आपन आरा' के बहाने एगो खास दौर के शैक्षिक आ साहित्यिक पड़ताल:

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

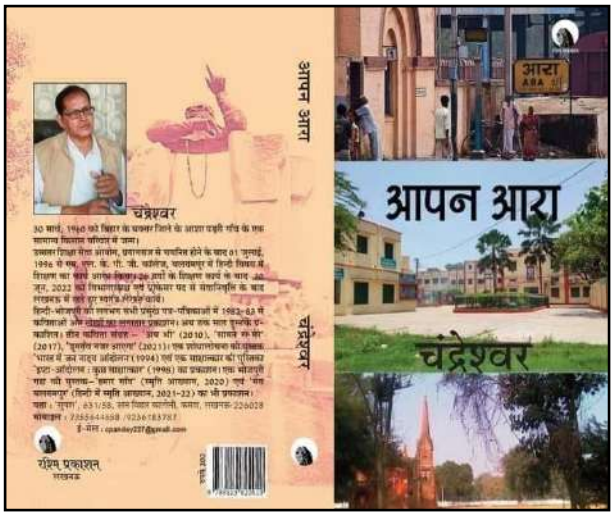

घर परिवार से दूर, शहर के जिनगी में अपना के समायोजित करत कुछ बने के जद्दो–जेहाद आ ओह दौर में संपर्क में आइल साहित्यिक बिभूतियन के परिचय का संगे उनुका से ढेर कुछ सीखे–जाने के अरमान मन में जोगवले एगो युवा मन के दस्तावेज ह 'आपन आरा'।'आपन आरा' में लेखक अपने जीवन के एगो महत्वपूर्ण कालखंड जेवन उ आरा कस्बा में विद्यार्थी जीवन के दौरान गुजरले बा –– जुलाई 1977 से जुलाई 1987 के दौरान क खट–मीठ अनुभवन के बहुत बिस्तार से उकेरे क परयास कइले बाड़ें। ई समय लेखक के उच्च्च शिक्षा आ करियर बनावे–सँवारे के त दौर रहबे कइल, संगे–संगे उनुका भीतरि के लेखक के जनमे–पनपे के दौर रहल बा, उनुका व्यक्तित्व गढ़ाए के दौर रहल बा। ओह दौर के साहित्यिक, राजनैतिक आ सामाजिक गतिविधि के ताना–बाना एह किताबि के प्राण तत्व लेखा उभर के सोझा आइल बा। सोझा त उहो कुछ आइल बा, जवन नवहा लोगन के सही राह से बिलगावे के कारक होला। लेखक बड़ सालीनता का संगे ओह कुल्हि चिजुइयन से किनारा करे के आ रहे के तौर तरीकन पर आपन लेखनी चलवले बाड़ें। लेखक 'आरा' में बितावल काल–खंड के बेगर कवनो लाग–लपेट के रेखांकित करे में कवनो कोताही नइखे कइले। लेखक के ई स्वीकारोक्ति ' अपने स्मृतियन के बढ़िया से छान–बीनि के , ओसा–फटक के जरूर पाठकन के सामने परोसल जा सकेला ।' सराहे जोग बा।

अब बतावत चलीं कि 'आपन आरा' चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी में लिखाइल दोसरका संस्मरण भा स्मृति आख्यान ह, जवना में 27 गो अलग–अलग घटनवन के अपना तरीका से समेटल गइल बा। ई सगरे संस्मरण लेखक के छात्र जीवन के जीयल दिनन के शब्द चित्र ह, जवन बहुते खूबसूरती का संगे उकेरल गइल बा। 'आपन आरा' अपने में अपना गाँव–घर आ कस्बा के सोन्ह महक में सउनाइल पाठकन के सोझा दस्तक दे रहल बा। लेखक के दोसरकी स्वीकारोक्ति ' हम डड़ाँर धर के ना चलीं, अरारे धर के चलेनी' उनुका लेखन शैली के सभेले अलगा खाड़ करि रहल बा। उनुका एह शैली में बस उनही के झलक बा। ' हमार नाल त ओहिजे गड़ाइल बा' से लेखक अपने जड़ के निरूपित करत अपने लमहर उड़ान का बादो 'आरा' के अपना से बढ़िके अहमियत देत देखात बाड़ें। 'आरा' लेखक के जिनगी के क्रम में एगो अइसन सोपान का रूप में सोझा आ रहल बा, जवन उनुका के उनुका हिसाब से रूढ़िवाद से नाता तूरत मार्क्सवाद से जुड़ला के अपना तर्क का संगे सही माने खातिर तइयार कर रहल बा।अपना परंपरा के रूढ़िग्रस्त कहि के नकारे क पाठ कतना उचित भा अनुचित ह, एह पर इहाँ बात कइल हमरा नीमन नइखे लागत। हर बेकती के आपन एगो सोच होले, जवना का संगे उ अपना जिनगी के राह तय करेला। कुछ अइसने इहाँ लेखक के दीहल साक्षो बता रहल बा।

लेखक अपने विद्यार्थी जीवन में मिलल गुरु लोग जइसे रामेश्वर नाथ तिवारी, मुरली मनोहर प्रसाद सिन्हा, चंद्रभूषण तिवारी, दीनानाथ सिंह, जितराम पाठक, गदाधर सिंह, कपिलदेव पाण्डेय, हरिदर्शन राय, रामप्रवेश राय जस पढ़ावे वाला त दूसरा ओरि रामेश्वर नाथ तिवारी, मधुकर सिंह, विजेंद्र अनिल, मिथिलेश्वर, नीरज सिंह, चितरंजन सिंह, भुवनेश्वर श्रीवास्तव 'भानु', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह , डॉ. बनारसी प्रसाद भोजपुरी आदि जइसन दिग्गज साहित्यकारन के संग साथ आ साहचर्य के बड़ नीमन ढंग से किताबि में परोसले बाड़ें। एह सब लोगन से मिलल नेह–छोह आ ज्ञान से अभिभूत बाड़ें। अइसन गुरु लोगन के सानिध्य का चलते लेखक के

अपना जे एन यू में ना पढ़ला के अफसोस से दूर रखले बा। अपने स्मृति आख्यान में लेखक एकरा के बड़ा मजबूती से सवीकरलो बाड़न। लेखक बड़ बारीकी का संगे अपने 'आरा' शहर, अपने 'आशा पड़री' गाँव ,अपने जैन कालेज का संगही कई साहित्यकारन से आगु बढ़े के मिलल मंत्रन के आजु ले अपना हिया में सँजो के आ जोगा के रखले बाड़न। एह बाति के प्रमाण रउवो देख सकेनी –

'' अपने प्रिय छोटे भाई श्री चंद्रेश्वर को इस सुझाव के साथ कि बाहरी प्रतिक्रियाओं पर विशेष ध्यान देने की अपेक्षा अपने अंतरतम की आवाज को सुने और ' संतुलित मानवीय विवेक ' के अनुसार निर्णय लें। भटकाव से बचने के यह नितांत आवश्यक है।''

ई सुझाव लेखक के सुप्रसिद्ध कहानीकार मिथिलेश्वर जी मिलल रहे। मने लेखक अध्यापन से जुड़ल भा साहित्य से जुड़ल लोगन के मूल्यांकन बस उनुका विधा केन्द्रित होके नइखे कइले बलुक ओह लोगन के हर पक्ष पर ताक–झाँक कइले बाड़न जवना से मनई के जिनगी के दशा–दिशा के परख आ पहिचान होला। लेखक कवनो अध्यापक, साहित्यकार भा मित्र के लेके कबों एक पक्षीय होत नइखे देखात। मूल्यांकन मूल्यांकने लेखा भइल बा, जवन लेखक के बेबाक व्यक्तित्व के परिचायक बा। एकरा संगही लेखक आरा के पारिवारिक आ पारंपरिक, लोक व्यवहार, राजनीतिक हलचल आदि के समझे खातिर नीमन आधार मुहैया करावे में जरिको कमी नइखे छोड़ले। कवनो काम भा जगह जब केहुओ के रचेले त ओकरा प्रति कइसे ऋण चुकावल जाव, एकर उपायुक्त उदाहरण लेखक पाठक लो के सोझा बड़ी उदारता का संगे रखले बाड़न।

'आपन आरा' से गुजरत बेरा कई बेर अइसन लागल कि संस्मरण के कइसे दस्तावेज बनावल जा सकेला, एकर सूत्र एह किताब में बड़ बिस्तार में उकेरल गइल बा। ई संस्मरण कतों उबाऊ भा नीरस नइखे भइल, जवन लेखक के दक्षता के मजगुत प्रमाण बा। सभेले मजगर बाति कि संस्मरण के लेखक लोगन के एक बेर एह किताबि से जरूर सरोकार बनावे के चाही, कुछ अइसने हमरा बुझाइल। पुस्तक रश्मि प्रकाशन, लखनऊ से प्रकाशित भइल बा। प्रकाशको के काम सराहे जोग बा। एकरा संगही हम आदरणीय अग्रज चंद्रेश्वर जी के बधाई आ शुभकामना देत ई कह सकतानी कि भोजपुरी बोले–समझे वाला लोगन के खातिर ई किताबि मजगर आ पठनीय किताबियन के क्रम में आगे देखाई देही।

❑❑

पुस्तक का नाम – आपन आरा
विधा– संस्मरण
(स्मृति आख्यान)
मूल्य– रु 200/– मात्र
प्रकाशक– रश्मि प्रकाशन, लखनऊ

❍ संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

देवेन्द्र कुमार राय

कवन पाठ पढ़ीं

दिन दुपहरिए में दरकल बा मनवा के गढी
सोझा किताब बा बुझात नइखे का हम पढ़ीं।

जाने छनही में इ कइसे बदल जाता रुप,
बिचार के चढ़ाई प कहीं कइसे हम चढ़ीं।

इहे सिखावत बा अब गली–गली में लोग,
आपना अंचरा के दोस रोज दोसरे प मढ़ीं।

छनही में छनकिला हमरा छुटतरुए गरमी,
केहु बतावत नइखे एह में तरीं आकि सरीं।।

दुलरुआ देवेन्दर के मन अजबे भकुआइल बा,
अइसन तातल भुभुरी में बताईं जीहीं कि मरीं।

❑❑

❍ ग्राम. पो०–जमुआँव,
थाना–पीरो,जिला–भोजपुर,
बिहार, पिन–802159

चंद्रेश्वर

दू बून लोर बा आ हम बानी

'सजग शब्द के रंग' हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के 94 गो कविता आ गीत–गजल के संग्रह हे । एह संग्रह के पढ़त–गावत–गुनगुनावत हमनी के देख सकीला जा कि एकरा में जीवन, समाज, प्रकृति–संस्कृति के विविधवर्णी छवि के उरेहल गइल बा । चेतन जी के कविताई के अगर असली हुनर आ कमाल देखे के होखे ते एह कृति के जरूर पढ़े के चाहीं । सांच कहल जाय त ऊ एह कृति में आपन करेज काढ़ि के राखि देले बाड़न । उन्हुकर काव्य साधना आ सिद्धि के सबरंग के एह एगुड़े शाहकार कृति में देखल जा सकेला । चेतन जी के शब्द सांचो सजग बाड़े स आ एह संग्रह के पन्ना –पन्ना पे इंद्रधनुषी रंग बिखेर रहल बाड़े स । कवि हर तरह से आपना काव्य विवेक के ले के सजग–सचेत बा । ओकर नजर अपना आसपास पे त बड़ले बा, ऊ सवंसे समाज,गांव–नगर आ समकालीन समय के बदलावो से जुड़ल बा । ऊ आपन एगो कवित्त 'अब ऊ बा गाँव कहाँ'' में लिखत बाँड़े ––''अब बा ऊ गांव कहाँ,भाव आ सुभाव कहाँ,चाव अपनइती,मोटाव बा घरे–घरे ।

....

अछरंग लावे खाती सभ पे तेयार सभे
ताके सभे सभके कुठाँव बा घरे –घरे ।।''

एगो दोसर कवित्त 'खोजत फिरे अँजोर' में लिखत बाँड़े ––

''सूखल इनार रोवे,नदी के किनार रोवे,
आम–फुलवार, बँसवार बा बाँचल थोर ।
बर, बड़हर,कटहर साँस गिने तोंत,
कहाँ बैठे कोइलआ सुग्गा कहाँ मारे ठोर ।।
फुदगुदी, तितर बटेर सपना के बात,
माथ पीटि रोवे चुहचुहिया के बिना भोर ।
प्रकृति सिंगार के उजारि नर बेशरम,
बोइके अन्हार सठ खोजत फिरे अँजोर ।।''

कवि चेतन गाँव में आइल नकारात्मक बदलाव से बहुते व्यथित दिखायी दे रहल बाड़न । लोग अन्हार बो के अँजोर खोजत फिर रहल बा । ई एगो एह समय के गहिरारे समस्या बा जेवना पे कवि रोशनी डाल रहल बा । कवि एह अन्हार से व्यथित जरूर बा बाकी इचिको घबराइल नइखे । ऊ आपन समाज के राह देखावत आ ओकरा में जीवटता पएदा करे खाती आपन एगो रचना –'रउरा चले के चाह बा' में लिखत बा ––

''रउरा चले के चाह बा,पसरल अन्हार का करी ?
रउरा भीतर उछाह बा,बे–पर के हार का करी ?
राउर लुफुति बा लोर पोंछे के गरीब के,
हिम्मत बा करेजा में ते नफरत गरार का करी ?
बेचौन समइयो में जब साहस उड़े के बा,
भू के ग ह खिंचाव आ चुबकीय घार का करी ?
सेंकनी जे कँपकँपात किरिन पूष–माघ के,
बा ध्येय दिढ़ ते दक्षिणी ध्रुवो के ठार का करी ?
राउर जो डेग खुद तूफान बनि के बढ़ि चली,
त छोट बवंडर ई चक्करदार का करी ?''

कवि चेतन के हर कविता में चाहे ऊ केवनो पारंपरिक –जातीय छंद में होखे भा छंद के बंधन से मुक्त होखे ओकरा में एगो भाषिक सौष्ठव आ सुघराई उन्हुका शब्द के प्रति सजगता के दरसा रहल बा । शब्द आ अर्थ के संगत देखत बनत बा । ऊ आपन भूमिका 'झाँझर गेंडुआ गंगाजल पानी' में लिखले बाँड़न ––

''रचना करत खा विचार ई रहल बा कि समय के तबाही,दुविधा,हतासा,निराशा आ टूटत–बिखरत गाँव, मनुष्यता आ नैतिक पतन के चित्र उरेहे खातिर शब्दन के काया में अर्थ के दीपदिपात आत्मा के रहल बहुत जरूरी बा । ई बोध हमरा रचनाकार के हमेसा सजग करत रहल बा कि अर्थ शब्द के फूल आ फल दूनो होला । फूल फल के वर्तमान हे त फल फूल के भविष्य । ''

कवि चेतन जी के कविता के संप्रेषणीयता के मूल वजह बा ओकरा में शब्द आ अर्थ के ''गिरा–अरथ जल बीचि सम'' भइल । अक्सर देखल गइल बा कि पंडित आ विद्वान के कविताई में ''कठिन काव्य के प्रेत'' प्रवेश करि गइल बा बाकिर पंडिताई आ आचार्यत्व के बखूबी निरबाह के बादो चेतन जी काव्य कला के भोजपुरी भाषा में ओह उत्कर्ष प ले गइल बाँड़े जेहवाँ से काव्याकाश के सरलता हर पाठक आ स्रोता के मन मोह रहल बा । कहीं से केवनो अझुराह प्रतीक आ बिम्ब से भरसक बचल गइल बा ।

एह संग्रह में लगभग हर रचना उद्धरण जोग बा । अगर हमरा प भरोसा ना होखे त केहू भोजपुरी के कविता के शैदाई भा रसिया खुद एकरा के मँगा के पढ़ो त जरूर पतियाई ।

चेतन जी कविताई के हद में खाली हमार–तोहार के बात नइखे भइल बलुक ओकरा में पशु–पक्षी, गोचर–अगोचर,महामारी–बीमारी, समय के सियासत आ ओकर झूठ–साँच सभके समेटल गइल बा । कवि के नजर गिलहरी प बा त कोरोना काल के अकेलापन–चुभन,चुप्पी आ सनसनाहटो प बा । ऊ एह कराल कालो प आपन इयादन के फाइल के सहारा बना के जीत हासिल करत बा –– ''भूलल बिसरल इयारन के इयादन के फाइल ।
खुलल बा, सामने दुख–दरद बा, आ हम बानी ।।
कसक बा,कशमशाहट भूल कइला के,दुखाता ।
धीरज के आह, दू बून लोर बा आ हम बानी ।।''

कवि चेतन जी के ई भोजपुरी काव्यकृति 'सजग शब्द के रंग' उन्हुकर सजग–सचेत कवि कर्म के खुल के गवाही दे रहल बा ।

पुस्तक का नाम– सजग शब्द के रंग
विधा –– कविता
भाषा –भोजपुरी
लेखक –– हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'
प्रकाशन वर्ष –– 2021
सर्वभाषा ट्रस्ट,नयी दिल्ली
सजिल्द मूल्य– 250 ₹
पृष्ठ संख्या –– 116

❑❑

❍ **लखनऊ, उ0प्र0**

विमल कुमार

गीत

गँउवों लहके लागल नेतागिरी हाबी भइल।
बड़की खराबी भइल ना।.....
सीधा–सादा सुनर गँउवा में,आइल ई बहारन
नेह सनेह भाईचारा के, कूदि कूदि करे पारन
हो सभ गँउवा लागे
सभ गँउवा लागे सहर आबूधाबी भइल
बड़की खराबी भइल(आइल)ना।
गँउवों लहके लागल.....

माई बहिनी चाची ईया,मुख से ना अब निकसे
बाबा चाचा भईया कह के,काम निकाल के घिसके
मति मराइल जाता
हो मति मराइल जाता लोगवा शराबी भइल
बड़की खराबी भइल(आइल)ना।
गँउवों लहके लागल.....

बुझना सुझना ढोंढ़ा मंगरु सभे खाड़ा होखे
एतवरिया लगनी रमकलिया छाती लगली ठोके
हो अनघा माल मिली
अनघा माल मिली सभके बेताबी भइल
बड़की खराबी भइल(आइल)ना।
गँउवों लहके लागल.....

झोंटा झोंटी मुहचोथउल,आपस में जे करसु
दोसरा के पंचइती ला,मुखिया के परची भरसु
कहेले हमरे नामे
हो कहेले हमरे नामे खजाना के चाबी भइल
बड़की खराबी भइल(आइल)ना।
गँउवों लहके लागल.....

कुलछना कलमुहाँ कलूटा,मुँहझौंसा जित गइल
बहू बेटी उ ना चिन्हेला,कपड़ा उजर दिल मइल
थाना पुलिस बीडियो
हो थाना पुलिस बीडियो,कबाबी शबाबी भइल
बड़की खराबी भइल(आइल)ना।
गँउवों लहके लागल.....

❑❑

❍ **जमुआँव, आरा –802301, बिहार**

सौरभ पांडेय जी के 'बतकूचन' के बारे में

डॉ. सुनील कुमार पाठक

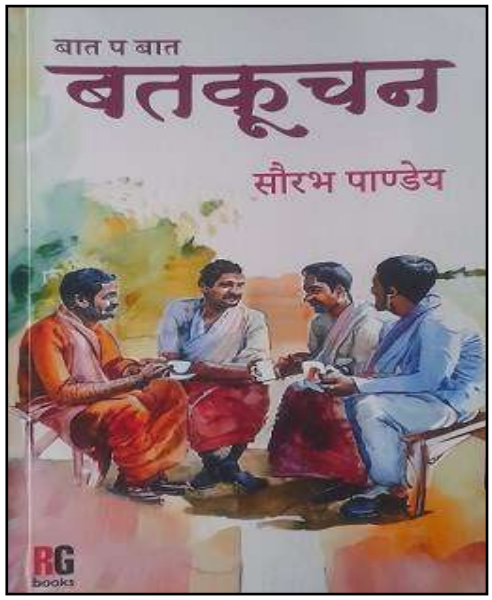

सौरभ पांडेय भोजपुरी में गीत–गजल लिखे वाला एगो समझदार कवि के नाँव ह।सौरभ जी नवगीत विधा में जेतने नवबोधी संवेदना के साथे आगे बढ़ रहल बाड़ें , शिल्प के स्तरो पर ओतने सतत प्रयोगशील रहल बाड़ें।गजल पर त उनकर मास्टरी बड़ले बा।

कवनों कवि जब गद्य विधा में, खास करके कथेतर गद्य के दिसाईं आपन कलम चलावेला त ऊ गद्य आउर रुचिर आ ललित हो जाला।गद्य–लेखन के कवियन के कसउटी बतावे के पीछे उद्देश्य इहे रहल होई कि ई देखल–समझल जाव कि महीन संवेदना, संश्लिष्ट बोध, कल्पनाशीलता,भावमयता,सांगीतिकता आ लालित्य के बल पर आपन कमाल देखावे वाला कवि सामाजिक चेतना आ वैचारिक प्रखरता के दिसाईं केतना ले पोढ़ बा।

''बात प बातःबतकूचन'' –कवि सौरभ पांडेय के रुचिर आ विचारप्रवण गद्य– लेखन के मजिगर नमूना बा।एह किताब के 'भूमिका' में ब्रजभूषण मिश्र जी लिखले बानीं –''बतकूचन सवदगरे ना बुधगरो बन पड़ल बा।'' मतलब कि 'बतकूचन' में रोचकता के साथे–साथे प्रखर बौद्धिकता आ विचारप्रवणतो बाटे।गोस्वामी तुलसीदास जी कहले बानीं–''जो बरषहिं बरु बारि बिचारू,होहिं कवित मुकुतामनि चारू।'' सुविचारन से कविता के चारुता बढ़ेले।इहे बात गद्यो के साथे कमोबेस बाटे।सुन्दर भावपूर्ण शब्दन में प्रखर विचारन के अभिव्यक्ति से गद्य गमक उठेला।

सौरभ जी के किताब 'बतकूचन'– स्व.आनंद संधिदूत के 'सतमेझरा', चंद्रेश्वर जी के 'हमार गाँव'आ 'आपन आरा',बलभद्र के 'झनकि बाज हो' आ भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के 'जइसे आमवाँ के मोजरा से रस चूवेला' –के बाद छप के आइल बिया। ई चारो किताब भोजपुरी में कथेतर गद्य विधा के आसमान छुआवे में काफी हद तक सफल रहल बाड़ी सन।. भोजपुरियो में ई विधा हालाकि अब नया नइखे रह गइल आ एकरो एगो दमगर इतिहास रहल बा, तबो हाल में छपल एह महत्वपूर्ण कृतियन के बीच 'बतकूचनो' के आपन खास पहचान बनावे के पड़ी, आपन वैशिष्ट्य साबित करे के होई।

सौरभ जी अपना कवितने लेखाँ गद्यो में शब्दन से खेले के अपना समरथ के भरपूर उपयोग कइले बाड़न।उनकरा गद्य में जसदेव सिंह के क्रिकेट –कमेंट्री के शब्द–सौन्दर्य आ लयात्मकता बा त सुशील दोषी के कमेन्ट्री के मनोहारी सहजता आ विचारसंपन्नतो भरपूर बा ।'क्रिकेट के वर्ल्डकप' अभी नधाइल बा त एने भोजपुरी कथेतर गद्यो के ग्राउंड में कम इंटरेस्टिंग मैच नइखे चल रहल! आनंद संधिदूत, चंद्रेश्वर,बलभद्र,भगवती प्रसाद द्वि वेदी, सौरभ पांडेय–सभे खेलाड़ी एक से बढ़ि के एक बा।बाकिर सभकर आपन–आपन रंग,आपन–आपन शैली,आपन–आपन कथ्य आ आपन–आपन भाव–भंगिमा बा।

(दू)

एह किताब के शुरुए में सौरभ जी 'आपन कहनाम' शीर्षक आलेख में एकरा कथ्य से जुड़ल कुछ बात रखले बाड़ें। एह से ई किताब पढ़े खातिर एगो दृष्टि मिलत बा।सौरभ जी लिखत बाड़ें–

1–''गोजर के हजार गोड़ ,त भोजपुरिया समाज के लाख कहीं! बाकिर एह लाखन गोड़ के दिसओ एक लाख बा।ई समाज एकमुड़िये आजु ले ना सोचलस, आ ना...जाए दीहीं आगा के आगा देखल

जाई।अबहीं ईहे लउकि रहल बा जे एह विसेस संग्रह के नाँवे एगो अइसन चउतरा बन्हा रहल बा जवना के मजगर वैचारिक रोशनी मिली अतना भोजपुरिया समाज से भरोसा बा।''

2–''आजु जीवन के हर क्षेत्र में लउकत एगो अजुबे किसिम के कमी के बूझत–देखत साहित्यकारन प सजग आ सचेत होखे के बड़हन जिम्मेदारी बडुए।समाज के कुल्हि कमवे अपना मूल से भटकल बुझा रहल बा ।का परम्परा ,का परिपाटी ,का बेवहार,का लोकाचार सभ।सभ पर जइसे कवनों गरहन लाग गइल बा।नवका के मतलब पहिलहूँ रहे। बाकिर नवका माने भटकल ना कहाई।कवनों नवहा अपना समै के सामर्थ्य होला।बाकिर आजु नवहा अपना परम्परा आ परिपाटी से हटकल–भटकल ढेर लउक रहल बा।हमनीं सिच्छा आ विद्या के बीच के भेद के बिसरा देले बानीं।दूनो में घालमेल भइल चलल जा रहल बा।विद्या –बुधी के बात करत आपन समाज पेट–भरउआ जोड़–तोड़ आ कागजी ज्ञान का पाछा परल बा।लोक–समाज विचारपरक विद्या से दूर भइल जा रहल बा।खासा देह–सुख खातिर मसाइल लोग मन आ बुरी के सुख प सोचल बन क देले बा।''

3–''आध्यात्मिके मन सोच में विवेक के जगह दे सकत बा।कवनों विवेकिये मन शुचिता आ शुद्धता खातिर आग्रही हो सकेला।''

– ई ऊ सब लेखकीय वक्तव्य बाड़े सन जवन 'बतकूचन'के कथ्य के टटोले में मददगार हो सकत बाड़े सन।

(तीन)

'बतकूचन' के अरथिआवत भूमिकाकार डॉ. ब्रजभूषण जी एकर सकारात्मक आ नकारात्मक दूनू पहलुअन पर विचार कइले बानीं। उहाँ के लिखत बानीं–''रहल बातकूचन त ओह में बाते के कुचल जाला,बात के छिलकोइया आ गुद्दा कुचा–कचा के छितराला आ ओह में से रस निकलके अलग सवाद देवेला।× × × × ×ई बातकूचन गाँव–गँवई में खूबे होला काहे से कि उहाँ सुने–जाने खातिर , जुटे–जउरिआये खातिर टाइम के कमी ना रहे। दोसरा के घर के टाट फाड़ के झाँकहूँ में लाज संकोच ना होखे।आ बहुत बेरिया ई अधिकारो बूझ के कइल जाला।एक दोसरा के मददो के भाव होला, अपना अनुभो आ जानकारी के दोसरा पीढ़ी तक पहुँचावे के जिम्मेवारियो निबाहे के रहेला।एही से गाँव–गँवई के लइका–लइकी बात–बेवहार में तेज आ लोकाचार आ लोक–व्यवहार में सहरिया लइकन से तेज होलन।''

–मिश्र जी के कथन से बतकूचन के सामाजिक–सांस्कृतिक उपयोगिता पर त प्रकाश पड़ते बा लोक–व्यवहार आ लोकाचारादि के दिसाईं ओकर महत्वो के झलकावल गइल बा।

पं. प्रताप नारायण मिश्र जी के हिन्दी में एगो ललित निबंध बा–'बात'।एह निबंध में उहाँ के लिखले बानीं –

''नाना शास्त्र,,पुराण,इतिहास ,काव्य ,कोश इत्यादि सब बाते के फइलाव हटे जेकरा में एक–एक बात अइसन पावल जाले, जवन मन,बुद्धि ,चित्त,के अपूर्व दशा में ले जायेवाली,अथच लोक–परलोक में सब बात बनावे वाली होले।हालाकि बात के केहू रूप नइखे बता सकत कि ई कइसन होले बाकिर बुद्धि दौड़ाइब त ईश्वर जइसन एकरो अगणिते रूप देखे के मिली।बड़ बात,छोट बात,सीधा बात,टेढ़ बात,खोट बात,मीठ बात,कड़वा बात,भल बात ,बुरा बात,सुहात बात,लागत बात इत्यादि सब बाते नू ह।

× × ×

एकरा अलावे बात बनेले,बात बिगड़ेले,बात आ पड़ेले,बात जातो रहेले,बात उउखड़ब करेले।हमार–तहार सगरी काम बाते पर निर्भर करेला।बातहिं हाथी पाइये बातहिं हाथीपाँव।''

–साँच पूछीं त बात पर जेतना मुहावरा भा कहावत होइहें सन ओतना सायिदे कवनों शारीरिक अंग –प्रत्यंग भा मानवीय आचार–व्यवहार पर आधारित होई।सौरभ जी अपना 'बतकूचन'' के जरिए बात बनावे भा बात अझुरावे के कोसिस नइखन कइले ऊ जवने बात रखले बाड़ें साफ–साफ आर–पार झलक जायेवाली। 'बतकूचन' के सगरी बात तथ्य आ तर्क पर आधारित बाड़ी सन।इहाँ आत्मालाप जइसन कुछ ना मिली बाकिर आत्मीयता जरूर मिली।बात बनउवल आज के जुग में भा कबो थो. रिके दिन ले भावल बिया ओकर अतिशयता सबके हलकानि में डाल देले।'बतकूचन' में कथारस भरपूर बा,संवादधर्मितो बा बाकिर ई सब से गम्हिराह बात में कवनों हलुकपन आ गइल होखे– अइसनका देखे के ना मिली।बात रखे के सौरभ जी के आपन तौर–तरीका बा, शैली बा जवन जवना के कुचला क्रियापद से नइखे झलकावल जा सकत।ऊ ना बात पेरत बाड़ें ,ना बात निचोड़त– गारत बाड़ें –बातन के सजा के –सँवार के ऊ अइसनका निखार देत बाड़ें कि गोड़ा बात चमकि–दमकि उठत बिया। 'बतकूचन' में नकारो के ऊ अइसनका निषेध तइयार कर देले बाड़न कि अचिको फालतू भा बेकार के नइखे लागत। एह संग्रह के सगरी आलेखन में पाठक के रूचि आ संस्कार के सहज परिष्कार के प्रयास पग–पग पर देखे के मिलत बा।

(चार)

बतकूचन' में 25 गो आलेख शामिल बा।सब अलग–अलग विषय पर केन्द्रित बा।विषय के

विविधता शीर्षकन के जरिये भाँपल जा सकत बा।कुछ शीर्षकन के जोड़ के आज के समकालीन कविता गढ़ा सकत बिया।जइसे–

''फगुनही फरौरी/फगुआ के रंङ/झींसी–बुनी/राति के अलोता/जात प जीत/उमेद के टूटल/टूटल त सपना ऊँघीं ना/समाज के सोरि/बियहुत/परोजन/छठि मइया परब आकि तेवहार? देस–परदेस/देस–दासा/वार के देस/ जियतार राष्ट्र/नोटबंदी के चहुँप/लोक आ साहित्य/भाषा आ बोली/आपन घाटी आपन भासा/माई बोली प गनित/ताव के भाव में भासा के दासा/अनेरिया के जुलपित्ती/लेखक आ लिखाई ।''

– का शीर्षकन के एह बिटोर से एगो मुकम्मल कविता उभरत नइखे दिखत जवना में जियतार राष्ट्र के सगरी अवयवन के उल्लेख के साथे–साथे नोटबंदी से लगाएत राति के अलोता चले वाला सगरी खेल आउर देस–दासा के सगरी कारनन– जेमें माई बोली प के गनितो सामिल बा, के जम के परख– पड़ताल कइल गइल बा।

'जियतार राष्ट्र' में लेखक के कथन बा –

''एक सुरुए से भारत अपना भूभाग में आध्यात्मिक समझ से बन्हाइल एकसूत्री इकाई रहल बा।ई राजनीतिक रूप से कबो एक ना रहे।काहे कि राजनीति अक्सरहाँ एक विचार के पच्छधर होले।जबकि भारत में हमेसा से भिन्न–भिन्न विचारन के सोआगत भइल बा।इहे बतिया पच्छिम के लोगन के भा ओह चश्मा से देखेवाला लोगन के ना बुझाला।तबे ई लोग कहेला ,जे ऊ का ह जवन भारत के एकसुरिये बन्हले आइल बा?त ओह लोगन के एह सवाल के सही जबाब बडुए,जे ऊ एजवा के धर्म आ एइजा के आम जन हवे ,जे भारतवर्ष के एकसुतहे बन्हले बा।''

एह अध्याय में ढाला प के पीपर तर साह जी के चाय–मड़इया में ओझा जी, जयप्रकास जी आदि पात्रन के बीच में चलेवाली बतकही में जियतार राष्ट्र के जवन रूप –सिरिजना भइल बा उहे भारत महाकवि बाल्मीकि आ विवेकानंद जी के सपनन के भारत ह– चिरजाग्रत,चिरप्राणवान भारत जवन 'स्वर्गादपि गरीयसि' के संज्ञा से सगरी दुनिया में सम्पूजित बा।

जुलपित्ती एगो अइसन रोग हटे जवन अचानके उपट जाला।नोंचत–नोंचत देह छील लेबे के मन करे लागेला।बाकिर ई सबका ना उपटे।'सुपर सेन्सिटिव' लोग एह से जादे परेशान रहेला।देह झोंकि के मेहनत–मजूरी करत पेट भरेवाला लोगन का लगे ई सायिदे कबो सटकत–फटकत होखे। अनेरिये गाँव भर (देश भर) के चिन्ता में दुराव रहेवाला लोगन के ई ढेर परेसान करेले ई बेमारी।. सर्वधर्म समभाव भारत के रग–रग में बसेला। बाकिर 'सेकुलरिज्म' के एगो महज नारा,मजाक,दिखावटीपन आ छद्म मानत सौरभ जी 'अनेरिया के जुलपित्ती' बतावत भारत के सर्वधर्म सदाशयता आ समरसता के मूल स्वर सुने–समझे के निवेदन कइले बाड़न।

'माई बोली प गनित' अध्याय में कथा ऐसी में संपादन के आखिरी में निर्दोष कुमार के रूप में सौरभ पांडेय बोलत बाड़ें–

''सचकी, ई भोजपुरी प दोकान चलावले कहाई.....भोजपुरिहा लोग आपन–आपन पाटी आ नेता धैइले,'टामी छू:' सुनते भर में जोर–जोर से भूँके वाला टामी हो गइल बा लोग...आ भोजपुरी बेचारी एह टामियन के झोंझ के 'भुंकार' भर बन के रहि गइल बीया।'' केहू के नीमन लागे भा बाउर –सौरभ जी बेपरवाह बड़न। काहे कि उनकरा बतक. चनो में सवदगर होखेले जादे साँच होखे के साहस आ साफ–बेलौस दिखे के भरोसा भरल बा।

एही संग्रह में एगो आलेख बा– 'समाज के सोरि।' ई भोजपुरिहा समाज के सोरि (जड़) कहाँ गड़ल बा , कहाँ से जुड़ल बा एकरा ओरि इसारा करत ऊ लिखत बाड़ें–

''भोजपुरिहा समाज ताव आ भाव के बहाव में जीये वाला गमखोर समाज रहल बा।

× × ×

रउआ दू अच्छा का पढ़ लेले बानीं राउर नजर–निगाह में भोजपुरिहा लोगन के रहे आ बरते के ढंङे नैइखे बुझात? राउर नजर में एगो समाज के तौर प भोजपुरिहा 'बेलुरा' लेखा जीये के अभ्यस्त होलें! बाकिर रउओ ई जान लीहीं ,गंगा जी हमनिये के बीच माई कहानी!आजुओ गाँव में बड़ आ पीपर के फेड़ा में गाँव के कुल देवता आ पूर्वज पीतर के नाँव चलेला!'' आज के बुद्धिजीवी आ ज्ञानी सभे गंगा जी के खाली नदी भर मानेला आ पीपर के एगो गाछ–बिरिछ भर बाकिर आम भोजपुरिहा मनई आ समाज गाछ, बिरिछ, पहाड़, नदी, ताल, इनार, धरती, खेत,खलिहान, बाग, बगइचा, आकाश, चिरई, पशु, गोबर, गोंइठा–सबसे आत्मीयता से भरल कवनों ना कवनों रिश्ता बना लेला आ सभकर दोहाई देत अपना साथे–साथे ओकरो के जगावत–जोगावत चलेला।

(पाँच)

सौरभ जी एतना सफाई से गुरु–गंभीर बातनो के बात–बात में अपना लेखन के जरिए परोस देले बाड़न कि उनका वैचारिक समझ के स्पष्टता के सहजे स्वीकार कर लेबे में केहू का कवनों आनाकानी के मौका ना मिली।एह किताब में मूल रूप से बिहार के लोकप्रिय छठ से जुड़ल एगो अध्याय बा –'छठि

मइया परब आकि तेवहार?' एह अध्याय में 'छठ' के सात्विकता,पावनता आ नेम–धेम बतावत पांडेय जी इहो बात स्पष्ट कर देत बाड़न कि परब आ तेवहार में बहुत अन्तर होला।ऊ लिखत बाड़ें–

''परब में बेक्तिगत तौर प समर्पन होला जे समहुते में बरतल जाला।बाकिर त्यौहारन में बेक्ति अप. ना के समाज से जोड़ लेला आ जवार के जवार सङही जूट के मनावेला।त्यौहार में सउँसे जवार में समहुत उछाह आ उमंग होला।बाकिर परब में बेक्ति–परिवार के बेवहार में आइल नेम–धेम से जवार में संयम के मनसायन छाँहि बन जाला।'' सौरभ जी के एह कथन के पीछे भारत के सांस्कृतिक परम्परा आ ओकर विकास के दिसाईं उनकर स्पष्ट समझदारी के झलक मिल रहल बा।

एह किताब के एगो अध्याय 'ताव के भाव में भासा के दासा' में सौरभ जी के भाषा विषयक चिन्तन बहुत रोचक ढंग से अभिव्यक्त भइल बा।भोजपुरी,हिन्दी आ अंग्रेजी के मिला के एगो शब्द सौरभ जी बनवले बाड़ें–'भोजेहिनलिश।' अपना भाषा– विमर्श में पांडेय जी के स्पष्ट मान्यता बा कि भाषा सब में आपसी आवा. जाही कवनों बबेजाँय बात नइखे बाकिर हर भाषा के मूल प्रकृति के रक्षा जरूर होखे के चाहीं जवना के चलते ओकर अस्मिता बचल रहे।ऊ बेलाग–लपेट के कहत बाड़ें –''शब्दन के लिहला–दिहला में अतना रोक–टोक भा मनाहीं नइखे।बाकी हिन्दी भाषा के 'ही' भा 'भी' भा आउरी कूल्ही संयोजक शब्द जइसे और ..ई कूल्ही ...भोजपुरी के बाँचल दासा के दुर्दासा में बदल दीहें स ।बोलिये रहल बाड़ी स।मनाही एह कूल्ही के आवे से होखे के चाहीं, संज्ञा आ नाँव से परहेज कब बा ए बाबू?बाकिर कूल्ही शब्दन पर भोजपुरी लचीला भइल त एकर दसेक ले ना आत्मा ले ना जाई आ आपन भाषा मुअला के कगार प आ जाई!'' भोजपुरी के मानकीकरण के सवाल शुरुये से बड़ा जटिल रहल बा।एकरा में ना कवनों किशोरी दास वाजपेयी भइलें ना कवनों गुरु कामता प्रसाद एकरा भेंटइले ।कुछ प्रयास डा.उदय नारायण तिवारी,शुकदेव सिंह,रासबिहारी पांडेय आदि के जरिए भइल बाकिर कवनों ठोस नतीजा सामने ना आ सकल।आइये ना सकत रहे।जवन भाषा जिले–जिले एकरूप ना होखे ओकर मानकीकरण केतना कठिन हो सकत बा–ई सहजे सोचल जा सकत बा। एने जब खूब लिखाई –पढ़ाई चल रहल बा, संचार–माध्यमन के पहुँच नगर से लेके गाँव–जवार के डगर–डगर तक ले हो गइल बा ,धीरे–धीरे एहू भाषा में रूपगत समानता विकसित होई।हठधर्मिता छोड़े के होई ।खूब रचात–बँचात रही त ई भोजपुरिया काहे ना बाचल रही सौरभ जी?भोजपुरी में एने कुछ भाषा–विज्ञान के किताब लिखाइल बासे बाकिर अधिकतर हिन्दी किताबन के अनुकरण में शब्दन के हेरा–फेरी करके।हम अभियो कहब कि खूब गंभीरता से पढ़ाई होखो,मौलिक आ दुराग्रहमुक्त ले खन होखो।सौरभ जी अपना 'बतकूचन'में जेतना मौलिक बाड़ें ओतना त मौलिक भोजपुरी के भाषाविज्ञान,काव्यशास्त्र आ व्याकरण लिखे वाला के होखहीं के पड़ी।बिना संस्कृत,हिन्दी आ अंग्रेजी के सम्यक ज्ञान के ई काम कठिन त जरूर बा बाकिर आपन सकान त बनावटी के पड़ी,दोसर चारा का बा।बिना हिन्दी के एको पत्र–पत्रिका खरीद के पढ़ले जइसे आराम से अपना भोजपुरी प्रेम के वशीभूत होके हमनीं हिन्दी वाला से उनकर छौ महीना के भारा उठावे–बइठावे लागीले सँ ओतना ईमानदारी से अगर हमनीं भोजपुरी के बारे में सोचे लागी सं, आपन ताकत आ कमी –दूनू पर वास्तविक ढंग से 'ढबुसवा– बोध' से उबरि के समझे–बूझे लागी सं त ई कवनो मुश्किल नइखे कि भोजपुरी के स्वरूप खूब बढ़िया गढ़ा जाई आ एकर भाषायी अस्मिता आ पहचानो बरकरार रह जाई।कवनों भाषा भा बोली में बहावे से रवानी आई,चमक–दमक आई,ओकर गति आ नाद–सौन्दर्य बढ़ी।बेवहार से,बोलला–लिखला–पढ़ला से ओकर प्रयोग आ प्रचलन बढ़ी।भोजपुरी मुख्तार जाति आ मनई के भाषा ना हिये ,ऊ आजो एतना किसिम– किसिम के बाहरी आ भीतरी दबाव झेलत अगर जिन्दा बिया त ई ओकर भीतरी जीवट आ रवानिये के परिचायक बा। सौरभ जी एह सब बातन से परिचित बानीं तबे भोजपुरी के मूल प्रकृति के बचावत एकर दोसर भाषा सब में आवाजाही में कवनों गलती नइखीं देखत।

किताब के एगो लमहर बाकिर बहुते मजेदार चौप्टर बा –'झींसी–बूनी'।झींसी–बूनी में घेराइल आदिमी केतना गंभीर आ काम लायेक बात बतिया जाला ,एकर नमूना बा सौरभ जी के ई आलेख।बात बनउवल एगो कला जरूर ह बाकिर सभे एमें निपुन ना होला।बात में फँसा के केहू के रोकि लिहला ले जादे कला एह बात में होला कि रूकनिहार अपना के घेराइल मत मान लेव।एह खातिर बीच–बीच में बात के गम्हिराह बनावे के पड़ेला।सौरभ जी एह कला में माहिर बाड़ें,ओस्ताद बाड़ें।बात–बनउवले में देखीं उनकरा लेखनी के कमाल–''खेत में दिन भर हुरपेटत मनई खातिर का देह–धाजा, का रूचगर खान –पान आ का ई कूल्ही से लेके ओकर नफासत

? अइसन लोग मोट मनई कहाले,त इनकर जिनिगियो मोट भइल करेले ।रहन–सहन , खान–पान,बोलल–बतियावल कूल्ही मोट भइल करेला ।बलुक सही कहावत त एगो आम भोजपुरिया के औसत जिनिगी मोटे भइल करेले।इ. हे सोझ–सहज उछाह जिनिगी उछाह भोजपुरिया लोगन के थाह–बेवहार आ संस्कारओ भइल करेले।''

'देस–दासा' एगो अइसन आलेख बा जवना में देश के सामाजिक,सांस्कृतिक, राजनीतिक– हर तरे के बातन पर हलुका–फुलुका , सीधा –सरल अंदाज में गंभीर चर्चा कइल गइल बा।एकर कुछ पंक्तियन के देखल जा सकत बा –

1–''बात के बहाव,हीत के बर्ताव आ विचार के झुकाव में हाल्दे बदलाव ना होले।जवन एक हाली बन गइल तवन बनल रहेला।''

2– ''ऊहे सही बा जे आम जन के लायक होत. ा।जवन अपना देस के नाँव– परिचय खातिर सही बा।जनता के लाभ होता आ जनता उमेद में तिकवतिया त सही बा।आ ना...त दू छन ना लागी आ खेला पलट जाई।''

3–''एही से हम कौ हाली कहेनीं,जे भूतकाल के काथा–कहानी से वर्तमान के जवानी के के रवानी ना बने।ई जरूर बा जे वर्तमान के चोख सोच आ कछऊ करे के तागद भूतकाल से मिलेला ,बाकिर आजु के पीढ़ी के राहता त वर्तमाने दीही ... भूतकाल के उछाह ना।''

4–''कहे के माने एतने बा ,जे पूँजीपतियन के , कॉर्पोरेट के लॉबी एह मोहरा–चेहरा के पाछा से सरकार चला रहल बिया।''

ऊपर के व्यक्त विचारन के पढ़ला के बाद देस के दासा बूझे–समझे में दिमाग पर तनिको जोर नइखे डाले के पड़त।सब सिनेमा के रील ले खाँ नजर के सामने नाचे लागत बा।आजु के पीढ़ी के राहता त वर्तमान दीही एतना साफ तरे सँकारे वाला आज के बा ?इहाँ त दादा बाबा के टाइम के सींकड़ देखा के 'हम कबो हाथीवाला रहनीं'–कहत झूठा दंभ पलले रहे से फुरसत नइखे मिलत।भूत के गौरव के 'यूटोपिया' आज एतना भारी पड़ रहल बा कि वर्तमान प विचारे के मौके नइखे मिलत।एह अध्याय में सही आ गलत के परखहूँ के सीधा तरीका बतावल गइल बा।देस के चला रहल बा ,एहू बात से परदा उठावल गइल बा।ई पूरा अध्याय समसामयिक बहुते तरे के विमर्शन के सूत्र पकड़ा रहल बा।

(छव)

एह किताब के कुछ अध्यायन में कविता,गीत, साहित्य,लेखक,भाषा–बोली आदि सगरी साहित्यिक विमर्शन पर विचार भइल बा।'लोक आ साहित्य', 'भासा आ बोली','लेखक आ लिखाई' आदि अइसने कुछ शीर्षक बाड़े सँ जवनन के जरिये लेखक अपना पोढ़ साहित्यिक सोच आ समझदारी के परिचय देत बा।कुछ पंक्तियन के हम उद्धृत करे के चाहबि–

1– ''गीत सही कह त कविता के एकदम–से आपन ..माने एकदम– से निजी ..सुर आ स्वर ह।निजी के माने ई जे गीत लिरिक भा तुकबंदी के पर्याय ना हो सके।गीत जवन आरोह–अवरोह में चलेला ,ऊ भाव–दसा के मथही के काम ना करे ,बलुक शब्दन के कमी आ बिधा–बिधानन के कमी के ओटत चल. ला।''(लोक आ साहित्य)

2– ''गीत के मतलब होला सामूहिक अभिव्यक्ति के सरस उपादान।एकवटइला के भाव समूह के कारन होला,आ समूह समाज के रूप ह।माने गीत कवनों जियत –जागत समाज के अभिव्यक्ति ह।त एह हिसाब से कविता विचारपरक भइला के कारन बेक्तिगतअभिव्यक्ति कहा सकेले।बूझल जाव त ई दूनू इकाई में बहुत बड़ अंतर बा।आपन भोजपुरिया समाज बेक्तिगत कवनों औधारना के नकारे वाला समाज ह।ई समाज समहुत जीये वाला समाज ह।एही से भोजपुरिया समाज गीत से बहरी ना जा सके।''(भाषा आ बोली)

3– ''साहित्य बबुआ ऊहे ह जवन समाज के नै. तिकता के सान पर चढ़ावे, हर आदमी के मन में सही आ गलत के भेद चोख करे के के प्रेरना देओ।''(भासा आ बोली)

4–''ई साहित्ये ह जवन पाठकन के ग्यान आ पाठ. कन के रुचि में परिष्कार करत रहेला।''(भाषा आ बोली)

5–''छोट–छोट विचार आ लहान समुझ के बाडुर–बाडुर लोग कवि–शाइर –साहित्यकार बनल आपन–आपन तिलंगी उड़ावे में लागल बा लोग।''(ले खक आ लिखाई)

6– ''कवनो भासा खलसा भाव–सम्प्रेषण के शाब्दिक माध्यम भर ले ना होखे, ऊ अपना समाज के बनल आ जियत रहला के प्रान–लहर भइल करेले।''(लेखक आ लिखाई)

7– ''भोजपुरिया समाज के नव धनाढ्य लोगओ अप. ना के भोजपुरिया बतावे में लजाले।त अइसनका समाज के का साहित्य आ का लेखन?त जवन होई ऊ लोक के उद्गारे नू होई!एह कूल्ही में कतना सधल साहित्य रहि सकेला?आ कतहीं बड़लो बा त सचकी में कतना अइसन साहित्य बा जवन बिधान

आ बेयाकरन के कसौटी पर पानीदार बा?''

(लेखक आ लिखाई)

'बतकूचन' किताब के एह पंक्तियन के पढ़िके के कही जे 'बतकूचन' बतकूचने भर बा?एह किताब में कथानक आ कथोपकथन के जरिये ई सगरी बात एतना सहज –सरल रूप में परोसाइल बाड़ी सँ कि एकनीं के समझल–बूझलो आसान हो गइल बा ।साहित्य पाठकन के रुचि के परिष्कार करेवाला होला,कविता आ गीत में का अन्तर होला,भोजपुरी समाज में गीते गतिमान हो सकत बा,साहित्य समाज के जीवन्तता के साथे– साथे ओकर प्रान–लहर होला, भोजपुरिया जाले भोजपुरी के लेके आपन हीन –भावना से ना उबरी साहित्य–सिरिजना बेमानी बा–ई सब बात बतकूचने में उभरि के आवत बा–अइसनका में ई बतकूचने एतना महत्व के हो जात बा कि कवनों साहित्यिक चर्चा एकरा आगे फेल होखे लागत बा।

कुल मिलाके के देखला पर भोजपुरी के प्रतिष्ठित आ प्रभावशाली लेखक–कवि–समालोचक सौरभ पांडेय जी के ई किताब ''बात प बात:बतकूचन'' भोजपुरी कथेतर साहित्य के एगो अनमोल निधि बिया जवना में बहुते रुचिर आ गम्हिराह ढंग से मौजूदा दौर के सगरी वैचारिक विमर्शन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कइल गइल बा।किताब में एगो उपन्यास लेखाँ कथा–रस के आनंद मिलत बा ,नाटक लेखाँ संवादन में चुटीलता बा आ कविता लेखाँ शब्द–सौन्दर्य बा, रुचिरता–रसपेशलता बा।बहुत–बहुत बधाई सौरभ जी के!

❑❑

❍ आवास संख्या–जी.3,आफिसर्स फ्लैट ,
न्यू पुनाईचक, पटना–800023(बिहार)
मोबाइल नंबर– 9431283596

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

गत्ते–गत्ते नयेकी सरकार आवेले...!

जइसे सुगना के दाबेला बिलार आवेले
ओइसे गत्ते–गत्ते नयेकी सरकार आवेले!

पहिले खोंते–खोंता जाले,
चुनचुन अंडा–बच्चा खाले
लेके नया–नया खून के विचार आवेले–––––––!

एक दिन पेंडुकी के धइलस,
एक दिन मैनी बच्चा खइलस
घर–घर देखे–ताके तीजे–त्यौहार आवेले.....!

मउनी बाबा बनके आवे,
कबहुँ नाचत–गावत धावे
रोजे नया–नया करके सिंगार आवेले..––––.!

जबसे चटलस दूध–दहेंड़ी,
दाबत आवेले पुँछेड़ी
बनि के बकरी के हेंडा में हुंडार आवेले....!

कबहुँ खोंखत–खाँसत आवे,
कबहु माथा पीटत आवे
कबो नया–नया बनि के बोखार आवेले....!

सुगना रामे–राम रटेलन,
'गड़बड़' सुबहो–शाम खटेलन
बीते जिनिगी ना घर में बहार आवेले....!

❑❑

❍ दिग्विजय पी जी कालेज
राजनंदगाँव, छत्तीसगढ

पाँच गो गीत

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

गीत

सजि रहे तोरण द्वार, राम मोरे आई गये
आई इहाँ मुसकाई रहे,
कि सजि रहे तोरण द्वार, राम मोरे आई गये।

कटल तम के अन्हियारी रतिया
सभके हिय उनही के बतिया।
दुअरे लागल कतार,
राम मोरे आई गये।
कि सजि रहे तोरण द्वार, राम मोरे आई गये।

ई बनवास कई सदियन के
बा इतिहास नेकी बदियन के।
अब गावहुँ मंगलचार
राम मोरे आई गये।
कि सजि रहे तोरण द्वार, राम मोरे आई गये।

दियरी जराई साजो दुअरिया
मह मह महकत सगरी कियरिया।
चहुंदिसि जय –जयकार,
राम मोरे आई गये।
कि सजि रहे तोरण द्वार, राम मोरे आई गये।।

गीत

अजोध्या नगरिया में बनलै मंदिरवा
हो सोहावन लागे।
उहवें बिरजिहें सिया–राम
हो सोहावन लागे।।
अइहो सोहावन लागे, अइहो सोहावन लागे
उहवें बिरजिहें प्रभु राम
हो सोहावन लागे।।
अपने बिरजिहें संगवे भाई सभ बिरजिहें
आई बिरजिहें हनुमान
हो सोहावन लागे।।
जहिया होई उहाँ प्राण प्रतिष्ठा
प्राण प्रतिष्ठा होई प्राण प्रतिष्ठा
अरे हुलसी सकल जहान
हो सोहावन लागे।।
अइहो सोहावन लागे, अइहो सोहावन लागे
उहवें बिरजिहें सीरी राम
हो सोहावन लागे।।

गीत

सरगो से सुन्नर प्रभु के धाम
हो अयोध्या नगरी।

हमरो अयोध्या नगरी
रउरो अयोध्या नगरी
सभके अयोध्या पति राम
हो अयोध्या नगरी।
आइके बिरजिहें सीरी राम
हो अयोध्या नगरी।

सासन परसासन संत आसन लगइहें
आसन बिरजिहें प्रभु राम
हो अयोध्या नगरी।
भोग चढ़इहें देस के दुलरुआ
भोग लगइहें प्रभु राम
हो अयोध्या नगरी।

गीत

आपन राम अइलें दुअरिया, सिकड़िया बाजल।
अइहो सिकड़िया बाजल,
अइहो सिकड़िया बाजल
खोलै अम्मा बजर केवड़िया,
सिकड़िया बाजल।।

हकसल होइहें पियासल होइहें
रउरा दरस ला तरासल होइहें
खोलिके लेआवहु न भितरिया,
सिकड़िया बाजल।।

हाथ फरिछावहु, मुँह फरिछावहु
ठहर बइठाई, दही मिसिरी मँगावहु
मंगल मनावहु न महलिया,
सिकड़िया बाजल।।

गोतिनि बोलावहु, ननदी बोलावहु
पलंग बइठाई सिया राम के सजावहु
आज नचावहु न पतुरिया, सिकड़िया बाजल।।
खोलै अम्मा बजर केवड़िया,
सिकड़िया बाजल।।

अवध बजनवा बाजता

हे कोसिला अइलें राउर ललनवा,
अवध बजनवा बाजता ||2||
अवध बजनवाँ बाजता,
हो अवध बजनवाँ बाजता
हे कोसिला अइलें राउर ललनवा,
अवध बजनवा बाजता ||2||

बजना के धुनि सुनी हरखित मनवा
चहु दिसि झुरकेला मलय पवनवाँ ।
झिर झिर बरसे लोराइल नयनवाँ,
अवध बजनवाँ बाजता।।2।।
अवध बजनवाँ बाजता,
अवध बजनवाँ बाजता
हे कोसिला अइलें राउर ललनवाँ,
अवध बजनवाँ बाजता।।

जीवा जंत संगे उमगे चिरइया
उमगे जन जन उमगेली मइया
सोझा देखि देखिके मयनवाँ,
अवध बजनवाँ बाजता।।2।।
अवध बजनवाँ बाजता,
अवध बजनवाँ बाजता
हे कोसिला अइलें राउर ललनवाँ,
अवध बजनवाँ बाजता।।

राम के राज होई,
सुख में समाज होई
दरस परस खातिर अपने परनवाँ ,
अवध बजनवाँ बाजता।।2।।
अवध बजनवाँ बाजता
अवध बजनवाँ बाजता
हे कोसिला अइलें राउर ललनवाँ,
अवध बजनवाँ बाजता।।

❑❑

❍संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

मदनमोहन पाण्डेय

ठीक नइखे

बहुत पोल्हवनी हॅ,मानल ह नाहीं,
मेरवनी बुझाता,छानल हऽ नाहीं।

झनकि के,झिंझोरि के
झटकि के जे चलि गइल,
ओके अगोरल ठीक नइखे।।

बिगड़इल चउवा हऽ,तुरा के भागल बा,
पगहा धइलहूं पर,झिपा के भागल बा।
अंखड़ि के,पंहड़ि के
हंकड़ि के चलि जाई,
छूटहा छोड़ल ठीक नइखे।।

तितहवा लौकी हऽ,नीमि पर चढ़लिबा,
अंगरेजी खादि पा के एतना बढ़लि बा।
जरी से छांटि के,
टुक्की–टुक्की काटि के,
घूरा में फेंकि दीं,
तेले में बोरल ठीक नइखे।।

पुरनकी भीति हऽ,गिरल बा भरभरा के,
नवकी उचुम्ह तिया, कइसन अगरा के।
घुघुवां माना,उपजे धाना,
का करी पूलिश
का करी थाना,
जऽरि कोड़ल ठीक नइखे।।

❑❑

❍ कुशीनगर, उ.प्र.

बूँट : अनाजन के सिरमौर

उदय नारायण सिंह

केहू उपेक्षा ओतने भर बर्दाश्त करेला जबले पानी नाक तक रहेला। आपन अवहेलना से बूँट महाराज असहीं नाक टेढ़ कर बइठल रहन ई सुनके के कि मकइया रे तोर गुण गवले ना जाला।ई सुन देख सोच में पड़ गइल बूँट कि सब गुण रहिते हमरा ओरि लोगिन के ध्यान काहे ना गइल। अबहीं मन में दुख के खाज मिटल ना रहे कि घाव पर नमक छिड़क देलस बाजारवाद बाजार में ' श्री अन्न ' के परोस।ओहू श्रेणी से बूँट के नाम लापता।बूँट महाराज पर ई देख दुख के पहाड़ टूट गइल।उन्हुका के माथे बइठवले भोजपुरिया समाज के लगवले कि देख भाई ' श्री अन्न ' के जाति से हमरा के कुजाति काहे छाँट देलस सरकार।पता लागल कि श्री अन्न में शामिल अनाजन के लाभ आ गुणवत्ता के आधार बना शामिल कइल गइल बा।ई सुनि बूँट महाराज कहले कि हमार हक मारल जाता बाकिर हमार के सुनीं अब रउवे लोगिन के सेवा में जिनिगी बितल बा , रउवा से हमार का छुपल बा तब अब रउवा हमरा पक्ष से खाड़ि होखीं तबहीं हमार इज्जत बाची ना त ई नतिया श्री अन्न हमरा के कतहीं के ना छोड़ी।सुनले रहीं बाजारवाद अकेले बना के मारेला, देखीं हमरे माथे पड़ गइल। भोजपुरिया असहीं केकरो दुख ना देखे इहां त बाति रहे आपन मनपसंदीदा अनाज बूँट के इज्जत के।ओहू प बूँट महाराज बढ़िया ले पानी चढ़ा गोहार लगा देले रहन त भोजपुरिया कहाँ माने वाला रहे।कूद गइल बूँट के इज्जत बचावे में लंगोटा कसि के।

अनाज के भवद्दी में अपना गुन से जौ जौ आगर 'बूँट' के बहुत पहिलहीं से हमनीं के भोजपुरिया बधार अपना मूंड़ी पर रखले बा।अनाजन के सिरमौर बूँटे के माथे बन्हले बा।बहरा रहे वाला भा बस जाये वाला ऊंच पीढ़ा वाला लोग के ई भरम बा कि एकरा के हमनिये के जानींला जा बाकिर गाँव – बधार आजो ई बतावे में अगवर पड़ी कि ना ए साहेब, गांव आईं त हम बताएब कि एही बूँट से बनल 'सतूई' राउर भूख त ओरवाईए दी, हाजमा भी ठीक करी। एही बूँट के सतुई से बनल लीटी इंटरनेशनल डीस में आजु शामिल बा। राउर दुनिया एह के आजु जानल भोजपुरिया समाज त फूटेहरी के पहिलहीं से माथ पर सिरमौरी देले बा।

हमनीं भारत के लगे पो. थी–पुरान के ना गिने जाये लायक ना जाने केतना खजाना परल बा।हमनीं इहां जब रिसी मुनि लोग एह पोथियन के लिखे चलल त कवनो बड़हन शहर में ना गईल,गांव के आस कईलख, इहवें अपना लोक से जुड़ाव बना के ग्रंथ रचलख लोग। लोके के बीचे रचाईल–'पाक शास्त्र'।इ उहे ग्रंथ ह,जवना में अनाजन पर काम भईल, खान – पान पर खोज भईल।लोके जानेला कि मनई के जिनगी के का चाहीं।एक हे गो सांस ले लेके जिनगी बितावे में केतना तितिमा बा,ई पहिलहीं बूझ गईल रहे लोग हमनीं इहां के पुरनिया।दस गो इंद्रियन में से एगो जीभो उहे इंद्रियन में गिनाला,जवना से स्वाद मिलेला।ई स्वाद मन के खुसी से भर देवेला आ आत्मा के जुरा देवेला।एह जिनगी में उहे करहूं के बा,जवना से जिनगी के जातरा जुरा–जुरा के पूरा होखो।अब स्वाद से जुरल पोथी भेंटल त ओह में सब अनाजन से उपर बूँट के राखल गईल ओकर मुँह देख के ना, गुण देख के।

अब इ मत पूछीं कि अईसन का रहे एह बूँट लगे कि एकरा के मोटहन अनाज में सभका से उपर रखाईल।ई उ ह,जवन आदमिए ना,जानवरन के मन मोहेला।एही से घोड़ा एकरा के देखते हुंफने लागेला।घोड़ा के पसन के अनाज ह ई आ घोड़ा के ताकत के राज।ई जब बोआला आ जामे लागेला त एकर हरियरी अइसहूं मन के मोहे लागेला।खेत में पसरल एकर साग के पुलुई, जवना के टुसा भी कहल जाला,के टूंग टूंग के नीमक आ मरीचा के संगे चबावला पर एगो अलगे माजा आवेला। ओकर स्वाद रुचिगर होला तब त बालमुकुंद गुप्त जी कहले बानीं कि–

' पास चने के खेतों में बालक कुछ जाते,
दौड़ – दौड़ के सुरुचि साग खाते घर लाते।

एह बूँट के संगे एगो लफरा बा कि एकरा के जेतने टूंगल जाई,ई ओतनहीं फैलाल लेला माने पसरत जाला।अब इहे टूंगलका साग बाजार में एने–ओने–केनहू बिकात लउकेला त मने नूं ह, ललच जाला।लोग टूट परेला आ घरे ले के आव. ला। नून जोरे थोरे मसाला डाल के उसीन दीं बूंट के साग तइयार।अब जवाईन, अदरक , करू तेल के संगे मरीचा डाल के खाईं ना,सब सब्जी लोग चारो खाने चित्त पर जाई।गजबे स्वाद भाई

जी। एह जमाना में त सात स्टार पवले होटलन में चना भा ओकरा संगे सरसों के साग के का कदर बा,ई होटल में जायेब सभे त अपने बुझा जाई।

एकर हरियर कचरी के होरहा लगा दीं त ओकर सोन्ह–सोन्ह स्वाद के आगे लाखों रुपिया के ''फास्ट फूड'' भूईंया लोटे लागी लोग। बुँट के हरियर कचरी के भभरा के गजबे स्वाद होला, खाइब तब नूं जानब।एकरा के खरिहान में आवे त दीं,एकरा बादे त एकर कहानी अपना उफान पर आवेला।एकरा के सूखा दीं आ खनहन बूंट के पानी में फुला दीं आ पियाज के संगे गाढ़ घुघुनी बनाईं।का कवनो मुरगा एकरा सोझा लगिहें।चलीं,एकरा के छोड़ी–तनीं एकर बेसन पिसवाई आ तब कमाल देखीं।एह बेसन से बजका छानीं,बुंदिया से रायता बनाईं,लड्डू बना के गनेस जी के मोदक चढ़ाई आ अपनहुं खाईं,बेसने के सब्जी(मछरी के मसाला दे के)बनवाईं।बारा – फुलवरा बिना कवनो परोजन अधूरा रहेला।सतुई के घोर के पिहीं मन तर–बतर।खाय बनावे के मन नइखे त पाव भर सतुई नून आ पियाज संगे लेके बइठ जाईं सभ परिवार अघा जाई। के रोकले बा रउआ के खोंसिया खाये के,चना चूर गरम खाये से! सेव भा दलमोट के बाते मत करीं,मन लुलुआ के रह जाई।अईसहीं नूं बनेला छप्पन किसिम के व्यंजन जी एकरा से।एकरा स्वाद के जब जब माजा लेब, राउर आनंद आकास में रही, जिनगी के आउर चाहीं का? तब त कहहीं के नूं परी कि ' बूँट बा फेर चिंता कवना बात के '।

एने बाजार में देखल जा रहल बा कि हमनिये के इहां उपजे वाला एह बूँट के बहरसी के सेठ–साहुकार एकरा के डिब्बा में बंद कर के,मन मोहे वाला फोटो डाल के हल्दीराम के भूजिया, जलान सत्तू आदि के नाम से बेच रहल बा लोग. ।पूरा देसवे छाप देले बा लोग विज्ञापन के बल पर आ हमनियो के उहे खोजत बानीं स।माने हमनिये के बूँट ''बबुरा बूंट लादे''चल गईल! ई बहुते चिंता वाला बात बा।बधार में अब बूँट बोआते नईखे।माने थान हारेब त हारेब,गज ना फारेब वाला हाल अप. नहीं बना ले ले बानीं स हमनी का। स्यंदन सुमन सोनाचूर के उत्पादन बढ़ावे में, पेटेंट करावे में लागल बाड़न। हमनियो में से केहू के आगे आवे के पड़ी बूँट के पैदावार बढ़ावे, पेटेंट करावे आ ओकरा खातिर बाजार उपलब्ध करावे खातिर, किसान के जगावे खातिर।बूँट,जवना से आपन दिन हमनीं के सोनहुला बना सकतानीं स,के भूला देहल अपने गोड़ में टांगी मरला जस बा। एकरा खातिर एक हाली विचार करहीं के पड़ी कि''हल्दीराम के भूजिया चाहीं कि अपना घर के पिसल बेसन से बनल लकठो?

अइसे त भोजपुरिया सांसद संसद में भोजपुरी के पक्ष में कमे बोलले बाकिर भोजपुरिया संस्कृति से जुड़ल बूँट के दुख देखि सुननीं ह कि मौन तूड़ देले ह लोग आ भरल संसद में नारा लगवले ह लोगिन कि ' हमारी सांस्कृतिक पहचान बूँट के अवहेलना ना सहब जा ', ' श्री अन्न में बूँटो के शामिल कइल जाय'। चलीं बूँट के बहाने ओह लोगिन के मुँह खुलल।आजु बूँट खातिर बोललेह, उम्मीद रखीं काल्हु भोजपुरी खातिर बो. लिहें।

❑❑

चलभाष – 8406099304

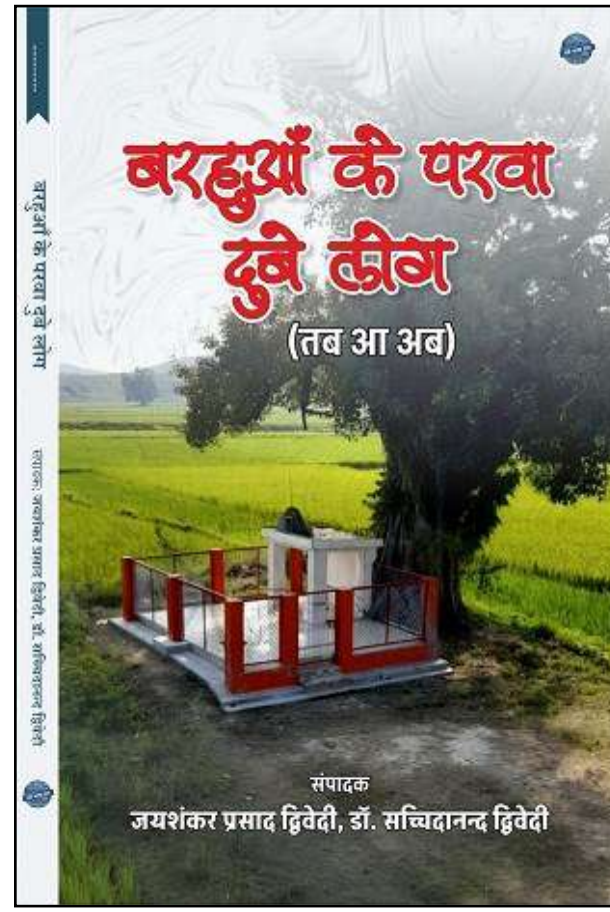

एलियन भाई

लव कांत सिंह

ऐ माई, चाँदा मामा के बाद के रहेला?
तारा
आ तारा के बाद के रहेला?
ओजा....ओजा रहेला एलियन
ई एलियन का होला माई?
एलियन बहुत तरह के जादुई ताकत वाला आदमी रहेलन स।
का उ जादू के ताकत से कुछो कर सकेला?
हम्म..
का हमरा खातिर बर्फी ले आ दी?
हं रे , केतना भूकवावेले , ठीक से बईठ ना....हिलाओ मत, ना त ढ़ील छूट जातारें स– कुसुम के माई ओ. करा सवाल से अगुता के कहली आ फेर ढ़ील हेरे लग. ली।
कुसुम तनी देर शांत रहली आ फेर पुछली– ऐ माई।
माई अनमने ढंग से हम्म कह देहली।
ढ़ील हेरवावल रोक के माई के तरफ ताक के पुछली– हमरा साथे खेले वाला केहू नइखे... एलियनवा एगो भाई दे सकेला का?
अबकी माई डंटली– चुप चाप ढ़ील हेरवाव, हेरवावे में नइखे मन नइखे लागत त जो भाग। जाके खेल राधवा साथे।

खिसियाये वाला सवाल ना रहे बाकी जब आदमी के लगे कौनो सवाल के जवाब ना रहेला त खिसिया के टाल देहल सबसे आसान आ प्रचलित तरीका ह। कुसुम के भईला के डेढ़ साल बादे उनका माई के गर्भाशय में कुछ गांठ बन गइल रहे जवना के कारण डॉक्टर द्वारा गर्भाशय ही निकाल देहल रहे। राजेश ना चाहत रहलें की उनका मेहरारू के कैंसर जइसन बलाय बेमारी हो जाओ जइसन की डॉक्टर बतवले रहे। एहीसे एगो बेटी राखे के अंतिम निर्णय के बाद राजेश डॉक्टर के हामी भरले रहलें।

अपना 7 साल के बेटी आ ओकरा माई के राजेश बहुत मानस। परिवार बहुत खुशी से रहत रहे हालांकि औरत के मन रहेला की जइसे एगो बेटी बिया ओइसहीं एगो बेटो रहित। कहल बा नु की जाथि बा आदमी ओसे खुश ना रहे आ जाथि नइखे ओकरे खातिर दुखी रहेला। कुसुम के माई के इहे हाल रहे।
एक दिन अचानक दुनो मियां–बीबी में झगड़ा हो गइल। हालांकि हर मरद–मेहरारू में होत रहेला, एहुजा होखे। बाकी आज के झगड़ा तनी विकराल रहे, राजेश खीस में हाथो उठा देले रहस। मेहरारु आव देखलस ना ताव आग लगा लेहलस। 10–11 घंटा के कष्ट के बाद उ प्राण त्याग देलस।

कुछ दिन तक त बौराह लेखा अपना बेटी के गोदी में लेले राजेश जहां–तहां बइठल फिरस। मन में पछताव के आग भीतर से जरा के राख करत रहे। एगो बेटी ना रहित त शायद उहो उहे राह ध लेले रहते। कुसुम जब–जब पूछे कि माई कहाँ बारी राजेश तब–तब रोए लागस। स्त्रियोग जादे दिन चलल ना। साल लागते–लागते घर के लोग किरिया धरा–उरा के दोसर बियाह करा देलस।

पहिलकी मेहरारु के वियोग नवकी मेहरारु के सम्भोग से तोपा गइल। ओशो कवनो छोट–मोट बाबा ना रहले, बहुत बड़ा विद्वान रहलें। उनकर बात विवादित भले होखो बाकी काटे लायक भी नइखे। अब कुसुम पर से भी राजेश के ध्यान कम होखत जात रहे। कुसुम के बुझाए की खाली माई ना बाबुओ जी चल गइलें।

आज कुसुम 12 साल के हो गइल रही। आईना के सामने बईठल, हाथ में माई के फोटो, लोर के नदी समुंदर बने चाहत रहे, आज तक के सब बात फिलिम लेखा उनका आंख के सोझा लउकत रहे। कबो उनका ओठ पर मुस्की झांक देवे त कबो लोर के बान्ह टूट जाओ।

एही बीच एगो कडकत आवाज आईल– ''अरे कुसमी , कहाँ उधिया गइले रे।''
कुसुम झट दे अपना फराक से लोर पोंछली आ अंगना के तरफ भगली– '' हं मम्मी, कुछ कहतारु का?''

''घरवा में भतार खोजत रलू हे''– कड़कासिन आवाज वाली नवकी माई गरियावते कहली।

बेचारी कुसुम सिसके चाहत रहे बाकी चुपचाप मुड़ी गाड़ के तरह–तरह के गारी सुनत रहली। फेर रोज के तरह खाना–पीना बनावे में लाग गइली।

मम्मी के अइला के कुछे दिन बाद कुसुम के पढ़ाई छूट गइल रहे। राजेश भी अब अपना मेहरारुवे के कहला पर ज्यादा रहस। कुसुम एक बेर मम्मी के शिकायत तब कईले जब उ छोलनी धिपा के दगले रहली आ लाते–मुक्के मरले रहल. ी। बाकी राजेश अपना मेहरारु के इजको ना कुछ कहलें उल्टे कुसुमे के लगले डांटे की गलती करबे त मार ना खईबे।

एगो उ बाप रहे जे बेटी के तनी से केहू डांट देवे त बुझास की चीड़ दीहें आ आज ऊहें बाप उल्टा डांटे लागल। ई सब देख के कुसुम एलियन गाछ के पांजा में ध के खूब रोवले रहस।

कुसुम के घर के पीछे एगो गाछ रहे, जवन ओकर माई, बेटी के छठियार ले दिन रोपले रहली। माई कबो मासूम कुसुम के सवालन के बौछार से बचे खातिर कह देले रहस की ई एलियन के गाछ ह। तबे से कुसुम एकरा के एलियन के गाछ कहस। एक बेर रक्षाबंधन के दिन कुसुम रोअत रहली की हम केकरा के राखी बान्ही त फुसलावे खातिर माई कहली की जो एलियन के गाछ में बान्ह दे। तबसे हर रक्षाबंधन के दिन कुसुम ओमे राखी बान्हेली।

माई के गईला के बाद कुसुम के अगर कोई आपन रहे त उ रहे इहे गाछ। एक दिन कुसुम ओही गाछ से अपना मम्मी के पिटाई के दाग देखा के रोअत रहली तबे एगो चमत्कार भइल। अचानक कुसुम के सब दाग ठीक हो गइल। कुसुम चिहा गइली , डेरा भी, दौड़ के घर मे भाग गइली। कई दिन तक उ पेड़ के लगे ना गइली। धीरे–धीरे अइसन–अइसन घटना घटे लागल जवना से कुसुम के ई विश्वास हो गइल की ई सब पेड़ के चमत्कार बा आ ई हमार मददगार बा।

एक बेर त जब मम्मी कुसुम के खाना बन्द कर देले रहली आ कुसुम एही गाछ तर रोअत रहली ताले उनका गोदी में लद–लद दुगो फर गिरल। जबकि ओह गाछ पर आज ले कवनो फर ना लागल रहे। उ गाछ कवना चीज के ह इहो केहू के ना पता रहे। केहू कहे कि जंगली ह त केहू कहे की विदेश के कवनो चिड़ई आईल होई ओकरे बिट से जामल विदेशी पेड़ ह।

कुसुम अब 16 साल के हो गइल रहली। बियाह के चिंता सबसे बेसी सौतेली मम्मी के रहे। छत पर बईठ के राजेश से कहत रही कि जल्दी कौनो लड़िका देख के एकरा के बिदा कर दे। इहे सब बात होत रहे तब तक मम्मी के नजर पड़ल की कुसुम पिछुती के केंवारी खोल के कहीं जातिया। राजेश के बांह धइले उ पिछुती के तरफ गइली। ओजा देखली की कुसुम केहू से बतिया रहल बिया। कड़क आवाज में डंपटली–'' कवन नातिया ह रे पेड़ के पीछे।''

कुसुम अइली असल बात बतावे तबले उनकर हाथ पीछे माहे अइन्ठ के मम्मी कहली– बोल कवना यार से मिले आईल रहले ह एजा।
कुसुम कुछ कहस ओसे पहिले उ ओकर केस ध के निहुरा देली।

राजेश टुकुर–टुकुर ताकत रहस। हालाकिं जस–जस जवानी ढलत जात रहे तस–तस अपना बेटी पर माया जागत रहे। चढ़बाक मेहरारु एकदम चांप के राखे। डरे कुछ बोलस ना। एने मम्मी के देह पर गाछ से एगो छोट डाढ़ टूट के गिरल त लगली छटपटाये तब कुसुम उनका पकड़ से आजाद भइली। गाछ के बारे में शुरू से सब बतवली बाकी मम्मी के विश्वास ना भइल। उ अभियो कुसुम के चरित्र पर अंगूरी उठावत रहली। कुसुम जब एक–एक घटना शुरू से बतवली त राजेश के आंख से लोर ढरे लाग. ल। लगले पछताए की वासना के भूख माया पर एतना हावी हो गइल रहे कि हम बेटी के टुअर बना देहनी।

राजेश के भीत्तर के बाप अब जाग गइल रहे। बहुत देख–सुन के कुसुम के बियाह तय हो गइल। तिलक के बिहान भईला से संझा–पराती गवाए लागल। एतना ताम–झाम देख के मम्मी के ि खसियाइला के ठेकान ना रहे बाकी राजेश अब तनी सख्ती देखावत रहस।

रात भइल, सभे गा बजा के सुत गइल तब कुसुम गइली एलियन गाछ के लगे। पांजा में ध के कहली– ''एलियन भाई हो, काल्ह हमार बारात आई, परसो त हम चल जाएब। तहरा बिना हमार मन ना लगी। अब हम केकरा के राखी बान्हम ?''
एतना कहत–कहत कुसुम के आंख से लोर बहे लाग. ल। आज उहो चाहत रहली की आंख के सारा लोर एहिजा बहा देस ताकि ससुरार में हंसी–खुशी के अलावा आउर कुछ के दर्शन ना होखे। गाछ के सुध ारावत कहली– ''तू छोट रहिते त थल्ला मार के साथे लेले चलती।'' घंटो तक कुसुम ओही गाछ से बतियावत रहली।

कुसुम के बहुत सुंदर बारात आइल, दुलहा–कनिया के जोड़ी के सभे खूब बड़ाई कइलस सिवाय मम्मी। मम्मी के करेजा पर सांप लोटत रहे बाकी सपेरा अब मजबूत हो गइल रहे त उनकर कुछ बस ना चलल। तारन के छांव में बिदाई के बेरा हो गइल। कुसुम सौतेली माई, चाची आ बाबूजी से गले मिलला के बाद भाग के पिछुती गइली आ एलियन गाछ के भर बांह के ध लेली, खूब रोअली आ बिदा हो गइली। उनका बिदाई के अगिला दिन सभे देख के चिहा गइल की जवन गाछ एक दिन पहिले हरिहर रहे आज इतना सुख गइल। देख के बुझाए की 5 साल पहिले के सुखल पेड़ होखे। कुसुम के लगे भी ई समाचार पहुँच गइल रहे कि ''एलियन के गाछ'' सुख गइल।

❑❑

○ नई दिल्ली–59

दिन बदली

डोली शाह

मामून एगो नापित के बेटी रहली। वो शुरू से ही सजे – संवेरे के बहुत शौकीन रहे। दो बच्चा के पढ़ाई, राशन– पानी के बाद मुंगेरीलाल उनकर सब जरूरत के पूरा ना करें सकत रहलन लेकिन हमेशा कहतन '' दिन जरूर बदली।''

अचानक एक दिन जिलाधिकारी साहब आपन दोस्त के संगे दाढ़ी कटवाए मुंगेरीलाल के दुकान पहुंचले रहलन कि ओकर ध्यान उन कर बात पर गयील । दोनों विवाह संबंधी बात करत रह लन ।

मुंगेरीलाल बड़ा मन लगाकर उन कर बात सुनत रहलन। उनकर दोनों कान मानो अधिकारी साहब के पास रहे ।मगर हाथ से कैंची भी चलत रहे ।इतने में तनकी वाद ही–– आई साहब राउर कर दी , आज घरे तनी जल्दी जाए के बात।

''अरे! हां हो, लेकिन तू तो रोज 10:00 बजे तक दुकान पर लागल रहेल आज इतना जल्दी जाए के बात कर तर'' '' हां हमारी लड़कियां के जन्मदिन है। छोटा–मोटा करके निपटा दे।''

'' कर भाई, साल में एक बार आवेला। अगला साल के रही ना रही ''

'हां , फोटो वगैरह रख ले बड़ा मोबाइल में '' हां ,हां'' ''वाह बहुत सुंदर बाड़ी! कहिह भैया , हमर तरफ से, जन्मदिन मुबारक 'हो''

''जी जरूर ''

''कितना साल के भयली बेटी''।

'' 21 साल''

अरे वाह तब तो पगड़ी बांध के तैयार हो जा बेटी के विवाह खाती ''

'' हां साहब अभी से चिंता हो रही है ? कैसे होई ,कब होई, कहां से हुई अरे चिंता मत कर सब हो जाएगा''। ''हम भी तो लड़की खोजतनी । हम त जहां जाएनी पहले ही कह देंनी हम के घर संभाले वाली लड़की चाही '।

मुंगेरीलाल मन ही मन ख्याली पुलाव पकावे लागलन। चल हम चली।'' ''आईब दोबारा साहब''

'' अरे जरूर ''

तीसरे दिन ही दोबारा दुकान पर अयिलन।

'' तनी गलवा चिकन चुपड़ा कर द'' ।

''हां साहब जी'' लड़की जचल ।

''अरे ना देखनी तो बहुत लेकिन एको उतना ना जचल। अच्छा तू अपन बेटी के विवाह के का सोचल ? '' कुछ नयखी सोच ले ,''अच्छा लड़का मिली तो आजे कर देब ।

(तनिक सोचलन)

'अगले रविवार के हमनी के मुंगेर आवतनीजा, तहरो घरे आइब, ''

'' जी जरूर लेकिन अचानक हम गरीबों के घरे...''

'' अइसे ही, तहार बेटियों से मिलल हो जाइ ।''

'' जी ,जी जरूर। हमनी के रविवार के इंतजार करब ''एगो फोटो दे दिह मोबाइलवा में !''

जैसे ही वह घरे जाकर पत्नी और बेटी के बताइलन पूरा घर खुशी से झूम उठल । लेकिन श्रीमती जी कहली––'' कहां उ लोग और कहां हमनी के !''

''अरे चिंता मत कर, लड़की अपन किस्मत खुद लेकर आवे ले , तू तैयारी शुरू कर द बस !

ओने अधिकारी साहब के घरे जाके तस्वीर देखावते मामून के पसंद कर ले लेन। कहे अनुसार रविवार के सपरिवार पंडित जी के लेके मुंगेरीलाल के घर पहुंचलन। दोनों परिवार में बातचीत भयील । विवाह के तारीख निश्चित भी हो गयील और अब जोर–जोर से विवाह की तैयारी शुरू हो गयील । ओने मुंगेरीलाल उधर– कर्जा लेके विवाह संपन्न करयीलन। यहां तक की एक साल के दुकान गिरवी रख देलन, अब काम तो करतन लेकिन दोसर के नीचे रहके ।

घर के आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गईल। इतने में एक दिन छोटा बेटा नंदू के पेट में दर्द शुरू हो गयील ।वह पास के डॉक्टर के देखलन तो पता लागल कि पेट में पथरी हो गयल बा ऑपरेशन करवाने पड़ी।

लेकिन उ ऑपरेशन से पहले अच्छा डॉक्टर के दिखावे सोनितपुर गयीलन।(अपने बहन के शहर)

जैसे ही औजा पहुंचलन उनका हालत देख , मामून देखते रह गईल ''अरे नंदू तू ,अचानक कैसे .. ना कोई फोन ना कोई खबर।''

अरे भोरे 7:00 बजे के डॉक्टर के टिकट मिलल हो ऐही से आजे आ गयीनी ह, डॉक्टर दिखावल हो

जाए और तीसरा से मुलाकातो हो जाइ।

रसोई घर पहुंचते ही पहली बार आइल बाडन भाई का लयीलन ह कपड़ा लाता लयीलही होइहन।''

''ना मां जी वो अचानक डॉक्टर दिखावे आ गयीलह। डरते सहमते पानी रसगुल्ला लेकर पहुंची । ''भाई मम्मी –पापा करीबन बाडन।''

''ठीक बाडन'' (इतना नजर चुरा के)

'' बताव ना ''

''अरे सब ठीक बा , मम्मी के बहुत कमजोरी हो गईल रहे दामी दामी दवाई लिख ले रहलन।''

'' आपन तबीयत की खबर सब बताव'' ।

बहुत दुखी हो के भाई पापा इतना बड़ा घर में विवाह करके पापा सोचलन ह कि हमार बेटी बहुत खुश रही लेकिन एक छोट घर से आकर इतना बड़ा घर में कितना दिक्कत होला कि कोई हमारा से पूछे। सबके सामने कपड़ा लता देखकर सिर झुक जाला । आते ही सास पूछली ह – पहला बार मिल बाडन का लयीलन ह भाई ? कपड़ा वगैरह लयीलही होइहन ।चल छोड़ इ सब , काल डॉक्टर दिखा ले अच्छा से ।

इतने में सासू मां अयली । मां पापा ठीक बाडन नू ?

''हां ''

'' ए बहू अगला सप्ताह छठ बाटे और हमनी के रिवाज बाटे कि ननिहाल के कपड़ा श्रिंगार के समान आवेला, पहले जनतू त आजे आ जयीत , लेकिन अब दोबारा उनका आवे पड़ी।''

'' उ अचानक आ गयीलन ह''

'' अच्छा ठीक बा खाना– वगैरा दे द, भोरे उठेके बा''

भोर भयील , हम उन्हें से वापस घर चल जाइब। कमरा से निकल ते ही सासू मां बोलली ––बहू , कपड़ा श्रृंगार के सामानवा के लिस्ट बनाके दे द ।

(मामून सोच लगली)कागज पर साड़ी लिखकर गुमसुम मानो कलम ही ना चलत रहे । इतने में सासू मां बोलली –– बहु लिस्टवा देख लिह कुछ छूट न जाए ।

मामून भाई के फोन कर बोलली –– भाई मैसेज पढ़ .. जैसे ही सर उठयीलन ₹20000 हाथ में थमयीली । कहे अनुसार ₹5000 आगे बढयीलन । जल्दी में आ गईन ह कुछ लावे ना सकनी ह'।

'' अरे कौनो बात नयीखे भाई ,तू रख ले'' इतने में पीछे से आवाज आईल 'लक्ष्मी के घूरावल ना जाला इतने प्यार से दे तरण रखल '।

मामून को हाथों में थमा के चल देलन, मान सिर पर भरल कलशी पानी गिरत रहे ।

डॉक्टर के दिखा के बतयह भाई ऋऋक्या बोललन है'' ।

''जी''

नंदू के घर आवते कयीसान बिया मामून डॉक्टर का बोललन।

''सब बतायीब । पापा औसे त ठीके बा सब लेकिन हमके आउजा जाके बड़ा अटपटा सा लागल '' ।

''कोई कुछ कहला सा का?''

ना सीधा तो कोई कुछु ना कहलश लेकिन उ लोग के आंख मानो सौ सवाल करत रहे। कपड़ा, लाता ,मिठाई फिर मामून के सास बोलली ह, छठ पूजा के त्यौहार अवता हमनी में कपड़ा श्रृंगार के समान ननिहाल से आवे ला।

हम तो उनकर लिस्टवा देखके सोचे लगनी ह, इतने में मामून हमरा के ₹20000 लुका के देलश । इतने में श्रीमती जी कहली –– हमनी के ठीक त कयनी है जा नू?

''तू इतना मत सोच ,ओकर जिंदगी तो सुधर गईल।उ खुश रही नू और हमने के का बांटे ... दिन एक जयीसन ना रहेला। हम सारा जीवन आदमी के सेवा करले बानी हमरो अच्छे होइ। लक्ष्मी जरूर अयीहन। दिन जरूर बदली। बाबूजी के बात सुन के सब के चेहरा पर एगो अलगे खुशी आ गईल।

❑❑

निकट– पी एच ई
पोस्ट– सुल्तानी छोरा
जिला– हैलाकंदी
असम–788162
मोबाइल –9395726158

तीन गो गीत

अंकुश्री

बिआह गीत

दुअरा दुलहा के सवारी आइल
बरतिआ आइल ना।।

सखी सब मिल के परीछन लगली,
अच्छत छिड़के, माला लेवे कोई भगली।
सासु जी खुषी से भ गइली पगली।
गारी गवाये लागल।
सासु के मनबतिया आइल ना।
दुअरा दुलहा के सवारी आइल
बरतिआ आइल ना।।

गारी सुन–सुन के बरतिया फुसके,
दोस्तन के देख–दुख दुलहा मुसके।
ठार बाड़े ससुर जाने काहे रुस के।
गांव–घर खुष बा।
खुषी के रतिआ आइल ना।
दुअरा दुलहा के सवारी आइल
बरतिआ आइल ना।।

एने होता चुमावन–परीछावन,
ओने हमउम्रन के आंख मटकावन।
बाजत पंचबजनिया मनभावन।
चकाचौंध रोषनी में
टीमकत अरतिआ आइल ना।
दुअरा दुलहा के सवारी आइल
बरतिआ आइल ना।।

❑❑

तहरे दया पर बईठल मईया

तहरे दया पर बईठल मईया
तू न तकबू त के पूछवईया ?

देर बहुत भइल सुन ल तू मईया।
अइसन असहाय के तू ही सहईया।
तहरे दया पर बईठल मईया
तू न तकबू त के पूछवईया ?
सुन के पूकार अब टार मत मईया।
अनाथ बेसहाय के तू ही रखवईया।
तहरे दया पर बईठल मईया
तू न तकबू त के पूछवईया ?

द सीख हमरा के पुकारब मईया।
बानी छितराइल, बा लागल भुलईया।
तहरे दया पर बईठल मईया
तू न तकबू त के पूछवईया ?

❑❑

पुरवईया

कब के भोर भइल, अंखिआ मुंदाता
बहे पुरवईया से उठलो ना जाता।
अंगिया में मीठ–मीठ दरद बुझाता
जम्हाई लेला से बेपरद हो जाता।

सांय–सांय करत जब–जब ई आवेलिआ
पिया मोर दूर बारें, मन तरसावे लिआ।
घोर घना लावे ले, नाहीं बरसावे ले
बिजुरी करकावे ले, आग लगावे ले।

मोर मेके आऊर बुलबुल जब चहके
मन मोर कुहकेला कोयल जस रह–रहके।
नोकरिया से प्रीत करके हमरा भूलइहें अस
एक मेयान में ना रहे दू गो तलवार जस।

पतिआ जब पवतें त बतिआ समझवती हम
अपना दरदिआ के ऊंहवा चहुंपवती हम।
ऊंहवा बुझाता, कवनो मिलल इयार बिआ
ईंहवा पुरवा के रात हमरा पहाड़ बिआ।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

सविता गुप्ता

जबरिया

"का हो बबुआ काहे नइखऽ मानत का चाही नोकरी चाकरी भी हो गइऽल "बड़की मामी घर में घुसते ही रमेश के पीछे पड़ गइली।
रमेश मामी के गोड़ लाग के चुप चाप मोटर साइकिल स्टार्ट कर के फर्रर्र से चल गइलन।
रमेश,तीन बेटी के बाद तेतर बेटा माई बाबू के आँख के तारा साँचों में लायक बेटा रहलन पढ़ लिख के भी शहर के नोकरी छोड़के गाँव के महाविद्यालय के नोकरी चुनलन।
आईं भाभी ,बइठीं रमेश के माई झट से एगो कुर्सी ले आ के देली ।आ अपने दोसरा कुर्सी पर बइठ के बुचिया के इशारा कइली ।बुचिया झट से एक गिलास शरबत आ मुरब्बा ले अइली ।
"खाई मामी माई बनवले बिया ।"
गपागप्प मुरब्बा खाके मामी के चटर पटर चालू रहे।आज मन बना के आइल रहऽली कि रमेश के जवाब ले के जाइब।
रात के सात बज गइल रमेश घरे ना अइलन तऽ बुचिया माई से कहली कि "माई ,बाबू के जाके बोलऽ भइया तऽ रोज चार बजे तक आ जात रहलन३"
मीना देवी भी मने मने चिंतित रहली ३"हँ रे ,काहे नइ खे आइल अभी तक।"
कॉलेज,यार ,नाता ,रिशता ,टोला,मोहल्ला सब जगह खोज भइल।कुछो अता पता ना लागल।
भोर में रमेश के मोटर साइकिल नहर के पास मिल गइल लेकिन रमेश के कहीं अता पता ना मिलल ।नहर में गोताखोर उतारल गइऽल।साँझ हो गइऽल घरे रोआ पिटा मचल रहे।
राति खानी एक बजे रमेश के बाबूजी के फोन पर फोन आइल दूसरा ओरी से रमेश फुसफुसा के बोलत रहलन कि "बाबूजी,हम पकड़ुआ सब के चुंगल में फँस गइल बानी।ई जमाना में भी इ सब होखता,हम त सुनले रहनी कि बिहार में अइसन होला हमरे साथ कांड हो गइल बा ।कॉलेज से आवत बेरा हमरा के गुंडा सब हाथ मुँह बांध के वैन मे बइठा के भभुआ के एगो गांव में ले आ के राति खानी एगो लइकी से बंदूक के नोक पर जबरिया बिआह कर दिहऽल गइल बा३ई तऽ कहऽ की लइकी समझदार बाड़ी चोरा के आपन फोन दिहऽली तऽ फोन करऽतनी ३लइकी भी अइसन शादी के खिलाफ बाड़ी एही से हमार मदद करऽ तड़ी।"

❑❑

❍ राँची झारखंड

बिम्मी कुंवर

जिनगी के लेखा-जोखा

जिनगी कब ले बिताई सम्हरत–सम्हरत?
उमिर कटल जा रहल बा डगरत–डगरत।

नेह–छोह के उमिर जिमवारी लील गइल,
रोकनी राह त तीत करेजा छील गइल,
इनकर–उनकर बखरी लेवरत–लेवरत।
उमिर कटल जा रहल बा डगरत–डगरत।

अनकर धन बिन खटले काहे खाई हम,
बे बूझले–ओझले बोझा काहे उठाई हम,
क गो रिस्ता छूट गइल दरकत–दरकत,
उमिर कटल जा रहल बा डगरत–डगरत

जे कहे सगा! हम बूझीला! उ मतलब से,
जे नगीचे बा! हम समझीला! उ गफलत से,
हमरा खातिर जांगर खटावे कहरत–कहरत!
उमिर कटल जा रहल बा डगरत–डगरत।

❑❑

❍ चेन्नई

भोजपुरी के उत्थान काहे नाही ?

राजू साहनी

भोजपुरी भाषा के मान्यता काहे ना मिलता , ई समझ में ना आवता जबकि भोजपुरी भाषा के एगो अलगे मिठास बा जब केहू भोजपुरी में बात करेला ता बड़ा सुकून मिलेला । हर एक शब्द बड़ा कर्ण प्रिय होला मतलब जईसे कोयल के बोली लागेला वईसे भोजपुरी बोली लागेला । अउर भोजपुरी भाषा बोले वाला एगो दुगो ना कई करोड़ बा तबो एके संवैधानिक दर्जा ना मिलल बा आखिर काहे? आखिर सरकार के कवन सबूत चाही ये भाषा के आठवी अनुसूची में शामिल करे खातिर ?

भोजपुरी भाषा आज से न सातवी सदी से बोलल जाला अउर कैथी लिपि में लिखल जाला तबो अइसन दुर्दशा ।ई बात सुनी के बड़ी कष्ट होला की भोजपुरी भाषा संविधान के संवैधानिक भाषा ना ह ।

बड़ी दुख होला एकदम दिल द्रवित हो जाला भाई लेकिन का कईल जाई हमनी में एकता नइखे ता का होई ,एकजुट कइसे होखल जाई अउर जबले एक होके आवाज न उटावल जाई तबले कुछ ना होई। हमके लागेला की ई सब भोजपुरियन के गलती बा जब खुदे भोजपुरी बोले आ लिखे में सरम आवाता ता दूसरा के का कहल जाव । जब 15 से 20 करोड़ लोग भोजपुरी बोलेला अउर ये भाषा के कई गो विद्वान कवि भईले जवन आपन आपन लेख के माध्यम से साहित्य सेवा कईले ।जबकि बिहार अउर पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड के लोग भोजपुरी बोलेला अउर कईगो यह इलाका से सांसद भी चुनी के संसद में गईले लेकिन बस कुछ जाना ही आवाज उठाईले लोग बाकी सब जाना वीआईपी सुख में भुला गइल लोग की हम हूं भोजपुरिया हई, अउर ई सबसे बड़ी विडंबना ई बा की एह भाषा के राज्य भाषा में भी नाम न बा ।

बस चुनाव के समय में भोजपुरी में बातीया के वोट ले ली लोग बाकिर चुनाव जीतला के बाद भूल जाई लोग कि हमरो भाषा भोजपुरी ह ।ई सब से इक बात ता समझ में आ गईल कि ई खाली राजनीतिक सडयंत्र के वजह से एके संवैधानिक अधिकार ना मिलता नाही ता कबके मिल गइल रहत ।अभिओ सब लोग मिलके अपने भाषा के विकाश खातिर आवाज उड़ाई । अब कुछ लोग ई कहि की भोजपुरी भाषा से का विकास होई उनका से कहे के बा कि सब भाषा पढ़ी लोग बाकिर आपन मातृ भाषा मत भुलाई लोग जईसे तमिल ,तेलगू,मलयालम ,गुजराती, पंजाबी, मराठी, बोले वाला लोग भी इंग्लिश के पढ़ें ला लिखेला बोलेला पर अपने मातृ भाषा के ना भुलाला ता राउवा लोग भी कुछ सीखी ये लोग से अउर आवाज बुलंद करी अपना भाषा खातिर ।

❑❑

❍ मदनपुर देवरिया (उ०प्र०)

डॉ रजनी रंजन

गोदना गीत

फेरिया लगावे गोदनहरी हो–2
कहे सुनी लऽ सजनवा।
गोदना गोदाइलऽ कलइया में,–2
संगे जाई हरि धामवा।।

धन दौलत सब इहें रही जइहें,
मटिया के देह खाली हरि घरे जइहें।
कहे इहे लोक जहनवा हो।।
संगे जाई हरि धमवा।।

अखियां झुकल मुख दमके फुलेसरी ,
गोदना गोदत नाव पूछे गोदनहरी।
बोलऽ गोरी पिया जी के नमवा,संगे जाई हरि धमवा।

राधा रुकमिन के जे बसेले परनवा,
नेह लागी जपे जिनके सगरो जहनवा,
उहे मोरे पिया जी के नमवा लेके जाइब हरिधमवा।।

गोदना गोदत गीत गावे गोदनहरी
पिया जी धनीया तू होइबु धनहरी
देखे जब नाम के सजनवा हो,संगे जाई हरि धमवा ।

❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

नचनिया

डॉ. रेनू यादव

'पूरईन गाँव क वकील साहब... धन बहारे वाले साहब.... राम बहादूर वकील क पाँच सौ रूपइया, अपने जोबना पर रखकर सुकरियाऽऽऽ अदा... सारा रारा रारा रारा रा ....'

'अरे जोबना पर काहें... मुनिया पर रखो मुनिया पर' पीछे चिल्लात भीड़ से आवाज आईल

'मुनिया पर रखले क औकात होखे चाही... पाँच सौ रूपइया में हमार नथूनियाँ भी नाहीं मिली वकील साहब...' नचनिया कमर अऊरी हाथ नचावत के फिर से अपने साड़ी क अँचरा मुँह में दबाके जोबना हिला दिहलस, 'नथुनियाँ पर गोली मार` सँईया हमार हो नथुनियाँ पर गोली मारे'

'औकात क बात करत बा साली अब दिखावत हईं औ. कात... चल ले दू हजार रूपया' पूरे ठसक से सरपंच साहब उठ खड़ा भइऽन, वो ही समय पीछे से नथुआ आकर रूपया थाम लिहलस, 'मालिक रउरे कहाँ जात बानी, हम जाके दे आवत बानी'

'धत् सारे औकात क बात करत बा...

हम खुद ही जाईब'

'लेकिन मालिक रउरे तनी ज्यादा ही' (पी रखले बानी) के मुँहऽव में घोंट गइऽल अऊर जइसही संभाले करतीन तैयार भईल वइसही सरपंच धम्म से वहीं गिर पड़ऽन । नथुआ रूपया लेके स्टेज पर चढ़ि गईल अऊर नचनिया के कान में फुसफुसा के नीचे उतर आईल । नचनिया कमर मटका–मटका कर तीन बार घुमरी पार गईल, 'सरपंच भईया क दिल बड़ा हो गईल... दू हजार रूपइया.... सर–माथे पर लगावत सोनपरी सुकरिया अदो सुकरियाऽऽऽ सुकरियाऽऽऽ सुकरियाऽऽऽ'

सुकरिया सुकरिया कहत के सोनपरी नचनिया तखता जोड़के बनावल स्टेज के एक ओर धम्म से कूद के फिर से भाग के दूसरी ओर दो बार कमर मटका कर धम्म से कूद गईल । ओकरे कूदले के साथ ही ढ़ोलक पर ढ़म ढ़म के थाप से माहौल अऊर गरमा गईल । लेकिन अबकी बार बीरनवा आके ओकर हाथ पकड़ लिहलस, 'सरपंच के भईया कइसे बोल दिहले, भईया लगिहऽ तोर' ?

ओही समय पर्दा के पीछे से एनाउन्स होखे लागल, 'कृपया स्टेज पर जनि चढ़ीं, नचनिया का हाथ मत पकड़ीं, महफिल क गरिमा बनवऊले रखीं, कवनो बात रह तो दूर से कहि देईं... नेग लेवे हमार आदमी आप तक पहुँच जइहँ'

'भईया नाहीं सईयाँ कह सईंयाँ' भीड़ से आवाज आईल लेकिन ओसे पहिले ही सोनपरी आपन हाथ छोड़ा के स्टेज के बीचो–बीच पहुँच गईल रहल, 'नथुनिया पर गोली मारे'

नाचत के ओकर नजर बार–बार शहरी बाबू से टकरा जात बा । इ पूरे सीजन में सोनपरी जहाँ–जहाँ गईल, उ वहाँ–वहाँ नजर गड़उले बइठल मिलल ।

सोनपरी बटलऽ बा एतना सुन्दर... कि केहू भी ओके देखत दिल के साथ–साथ आपन जमा पूँजी हार जाई । ओके नाच में बोलउले करतीन बोली लागेला अऊर उ जवने नाच में गईले क हामी भर द वहवाँ पहले से हो–हल्ला मच जाला कि इ बारात में सोनपरी आई । अब त सोनपरी के नाम पर बारात क स्टेटस तय होखे लागल बा । वइसे त आज कल रंडी (नाच में औरत लोग नाचे लगली त उनके रंडी नाम दे दिहल गईल) के नाच क प्रचलन बढ़ गईल बा, लेकिन सोनपरी के आगे कवनो क टिकल मुश्किल बा ।

दूर दूर तक फइलल खेत के बीच्चे में त खत जोड़के स्टेज बनावल गईल रहल, स्टेज के ऊपर टेन्ट ये तरह से बाँधल गईल रहल कि कम से कम तीन तरफ से नाच दिखाई द । नाच शुरू भईले से पहले बाकी नचनियाँ स्टेज के पर्दे के पीछे तइयार होत रहली, लेकिन बेहद चमकीली रोशनी के केन्द्र में घूँघट निकलले सोनपरी के सजा–धजा के सोने की मूर्ती के जइसे पर्दा के सामने खड़ा कई दिहल गईल अऊरी स्टेज के बगल से तीरछा कइके टेबल फैन के अइसन रक्ख दिहल गईल कि सोनपरी क अँचरा पेट से उड़िया–उड़िया जा, कब्बो जोबना से हटके नुमाइश में लहरा उठऽ त कब्बो घुँघट के साथ मेल–जोल बढ़ा के सबके अऊरी ललचा द । एतना में नाच से पहले ही सबके दिल में धुकधुकी उठ जा कि एक बार घुँघट हटा द त पूरा दीदार हो जा । पूरे नाच के दौरान ओकरे एक गीत क सबके इंतजार रहऽ, 'भरली जवानी में छोड़ गईन हो... बलम परदेसिया' । इ गाना के पहले मुखड़ा पर ही भीड़ उमड़ पड़ऽ । ओकर जवानी बरबाद भईले से बचावे करतीन कुछ लोग

ओके स्टेज पर ही कोरा में उठा लँऽ अऊर खुद ही नाचे लागँऽ । गीत के बीच–बीच में ओकरे ऊपर रूपया न्यौछावर करे वालन क ताँता लागल रहऽ अऊर ओकरे सुकरिया अदा कइले के स्टाइल पर अपने सीना पर हाथ रखि रखि के लोग फिदा हो उठँऽ ।

आज शहरी बाबू क नजर सोनपरी के अंदर तक भेद रहल बा, जइसे ही सोनपरी क नजर शहरी बाबू से टकरा उ काँप उठऽ, ओकर ध्यान नाच पर से हट जा अऊर गाना भूलाये लागऽ । ओकर साथ देवे करतीन कजरी के भेजल गईल, सोनपरी क अधूरा गीत कजरी नचनिया पूरा कइलस लेकिन शहरी बाबू क नजर हटऽब नाहीं कर । अइसने में ब्लाक परमुख बाबू उठ खड़ा भइलन, 'का बात ह सोनपरी रानी, आज हमरे अलावा दिल कहीं अऊरी लग गइल बा का ? हमार फेबरेट गाना तो सुनाव'

'रात भर होठलाली चाटेनऽ' क शुरूआत होतऽ नाच देखे वालन क कदम अपने अपने जगहिं पर ही थिरक उठल अऊर संगीत के साथ सब एक्क साथे नाच लागल । इ गाना पूरा होइ नाहीं पउलस कि मुनिया पर रख कर सुकरिया अदा करे करतीन ब्लाक–परमुख क प्रस्ताव आ गईल । ब्लाक–परमुख पचास–पचास रूपये क नत्थी कइल पाँच हजार रूपये क गड्डी सोनपरी के कपारे पर न्यौछ दिहऽन अऊर सोनपरी दूनों हाथ में नोट क गड्डी लेके लहरा उठल । अपने साड़ी क प्लेट घुटना तक उठवले स्टेज के एक कोने से कूद के 'हमरे जान... (पीछे से आवाज आइल दृ ओय होय) हमरे माल (ओय होय) बलाक–परमुख बाबू क पाँच हजार रूपईया के... मुनिया पर रखके सुकरियो अदोऽ' कहत के दूसरे कोने पर भाग कर गईल अऊरी नोट के गड्डी से आपन साड़ी क प्लेट छुआवत के सुकरिया अदा कइलस – सुकरियाऽऽऽ अदा सुकरियाऽऽऽ अदा। ब्लाक–परमुख बाबू खुशी के मारे आसमान में दू बार अपने बन्दुक से ठाँय–ठाँय गोली छोड़ के नाचल शुरू कई दिहऽन अऊर फिर गाना शुरू भईल जवने क सबके इंतजार रहल, 'भरली जवानी में छोड़ गईन हो... बलम परदेसिया' एतना में सब बाराती–घराती स्टेज पर चढ़के नाचे लगऽन, सोनपरी स्टेज के पीछे भागे ही वाली रहल कि शहरी बाबू सामने से बाँह फइलवले खड़ा रहऽन । सोनपरी के एक मिनट करतीन उ डी.डी.एल.जी. क शाहरूख खान जइसन दिखाई दिहऽन । उ येकरे एतना करीब रहऽन कि उ उनकर गरम–गरम साँस अऊरी देह क तपन महसूस होत रहल । उनकर बाँह जइसे ही येके पूरी तरह से आगोश में भरे वाली रहल कि कजरी सोनपरी के झटके से बइठा दिहलस अऊरी सरक कर दूनों पर्दा के पीछे हो गईली । स्टेज पर नाचे वालन के भीड़ में शहरी बाबू ठगाईल रह गईन ।

इ नचनिया क बड़ी कामयाबी मानल जाला जब ओकरे थिरकन के साथ सब होश खोके थिरक उठँ अऊर बारात नचनिया में तबदील हो जा । इ उह समय होला जब नचनिया फूर्ति से स्टेज के पीछे भागके चंद मिनट करतीन आराम पा जाले । आज सोनपरी भी बहुत थकल महसूस करत रहल ओके बार–बार शहरी बाबू क नजर भेदत रहल लेकिन ओके नाहीं मालूम रहल कि पर्दे के पीछे भी एक अऊरी नजर ओके अंदर से तोड़ देई ।

स्टेज पर घराती–बाराती क स्टेज–तोड़ डाँस शुरू हो गईल । चकरोट पर बइठल हँसत–विहसत नाच देखे आइल मेहरारू उबियाये लगली । आखिर सोनपरी चली गइल त इ लवंडन अऊर बुढ़उवन क नाच के देखी ? उ सब ही ही हा हा करत के उठके कुछ अपने गाँव के ओर त कुछ वियाह देखे करतीन रहियाये लगली । सोनपरी के गर्मी फूँक दिहले रहल ये ही से उ सीना से आपन अँचरा हटा के हवा खाये करतीन खेतानी की ओर बढ़ि गईल । हल्की मद्धम चाँदनी अऊर बिजली के अँजोर में अचानक से चाँद जइसन दमकत पूर्णिमा क मुँह खिलखिलात के सामने पड़ गईल, दुनहुन क नजर आपस में टकरा गईल पूर्णिमा खुश होके कूद पड़ल, 'अरे सखि देखऽऽ सोनपरी' !!

सोनपरी झट से सीने पर अँचरा डार लिहलस अऊर ओकर ठिठकल कदम पीछे की ओर भाग खड़ा भईल । उ स्टेज के पीछे रखल कूर्सी पर बइठ के हफर–हफर हाँफे लागल । कजरी दौड़ के पानी ले आइल, 'का हो गईल तुहके' ?

(शेष अगिला अंक में––)

❑❑

❍ **डॉ. रेनू यादव**
असिस्टेंट प्रोफेसर
भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग (हिन्दी)
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
यमुना एक्सप्रेस–वे
गौतम बुद्ध नगर
ग्रेटर नोएडा – 201312

भोजपुरी आलोचना के चमकत रंग ह 'रंग-बिरंग'

रवि प्रकाश सूरज

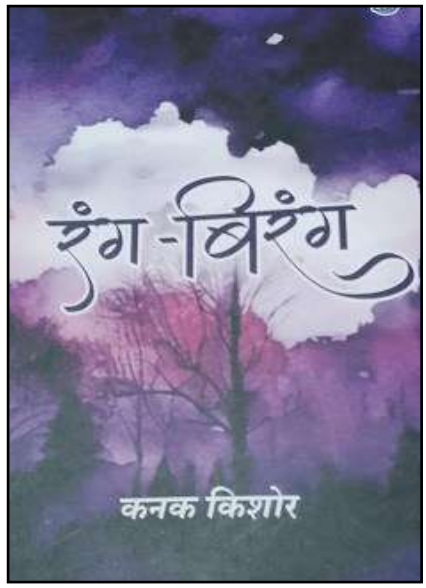

भोजपुरी साहित्य खातिर नयका साल सुभ होखे एही कामन के साथे नयका साल के पहिलका पुस्तक समीक्षा प्रस्तुत बा. समीक्षित पुस्तक 'रंग–बिरंग' ह जवन भोजपुरी साहित्य में बढ़िया आ गुणवत्तापूर्ण साहित्य के प्रकाशक सर्व भाषा प्रकाशन से छपल बिया. कनक किशोर जी के टटका किताब 'रंग–बिरंग' के प्रकाशक भोजपुरी कथेतर गद्य के कोटि में रखले बानी. एह किताब में कथेतर गद्य के दू गो विधा निबन्ध आ आलोचना समाहित बा. भोजपुरी साहित्य में गद्य ओहू में खास कर के कथेतर गद्य के कमी प कई बेर बात उठेला. कनक जी एगो गम्भीर रचनाकार बानी आ लगभग हर विधा में लेखनी चलवले बानी. कथेतर गद्य के विधा उहाँ खातिर कवनो नया नईखे बाकी कूल्ह सतरह गो निबन्ध आ आलोचना के रचनन के एके जगह प्रस्तुत करके उहाँ के भोजपुरी में काठेत्र गद्य के कमी प बात करे वाला लोगन के मुँह प ताला लगावे के सफल कोसिस कईले बानी. किताब के शुरू में भोजपुरी के दू गो पुरनिया साहित्यकार हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' आ भगवती प्रसाद द्विवेदी आपण बात खले बानी. ओकरा बाद प्रकाशकीय में केशव मोहन पाण्डेय आ आपन बतकही में कनक जी के बिचार बा . किताब के पहिलका जनवादी गीतकार गोरख पाण्डेय के गीतन प कनक जी के बरियार आलेख बा जेकरा में उहाँ के गोरख पाण्डेय के गीतन में सामाजवाद के परिकल्पना आ राजनीतिक विद्रूपता के स्वर खोजे के कोसिस कईले बानी. भोजपुरी के बरियार नेंव आ साहित्यकार आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के सृजनशीलता के बारे में कनक जी तीन गो समीक्षात्मक आलेख के जरिये बता रहल बानी. किसान कवि आ आलोचक बलभद्र जी के व्यक्तित्व–कृतित्व के उभारे वाला भी तीन गो आलेख किताब में संकलित बा. चंद्रेश्वर के कृति 'हमार गाँव' के बारे में लिखत कनक जी आपन गाँव के याद करत जाने कब पाठक के आपन आलेख से जोड़ लेतानी कि हर केहू के आपन गाँव के याद आँखिन के सोझा आ जाता. ई कमाल कनक जी के ही कलम से ही निकल सकेला. हरेन्द्र हिमकर के तुलसीदास के उपर लिखल खंडकाव्य 'रमबोला' के जिकिर करत कनक जी तुलसीदास के साहित्य आ उहाँ के जिनगी में घोराईल लोक–रंग के व्याख्या करत नजर आवतानी. 'अंगनाईया' के समीक्षा करत कनक जी डॉ हरिराम द्विवेदी के रचनन में व्यक्त लोक–संस्कृति के विशेल्ष्ण करतानी उहँवे 'मूल्यांकन' के समीक्षा के जरिये कन्हैया सिंह 'सदय' के आलोचक के रूप में मूल्यांकन कर रहल बानी. समकालीन भोजपुरी साहित्य के दू गो किताब अंकुश्री के कहानी–संग्रह 'कनफूल' आ स्वामी स्वर्गानन्द के 'थेंथर मन' के जवना महीनी से व्या ख्या आ विश्लेषण भईल बा ओकरा से दू गो बात साबित होखता कि भोजपुरी साहित्य में आजुवो बरियार लिखा रहल बा आ भोजपुरी आलोचना भी अब गते गते पोढ़ हो गईल बिया. समीक्षात्मक निबंध ान के अलावे किताब में कनक जी के ललित निबन्ध ा भी संकलित बा. 'फगुआ में सभे केहू लगुआ', 'मोतीचूर' आ 'डांट, जात, बात, भात आ लात' पढला के बाद ई बात मन में आवता कि कनक जी एहू विधा में पारंगत बानी आ ललित निबंधन के एगो अलग से संग्रह जल्दिये लउके त कवनो अचरज ना होई. एह किताब में एगो महत्त्वपूर्ण आले ख बा जवन भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन आ विपणन के समस्या रेघरियावता आ ओकर दिसाई प्रयास करे प जोर दे रहल बा. कूल्ह मिला के 120 पेज के किताब भोजपुरी कथेतर गद्य के कमी के पूरा करत नजर आवतिया.

❑❑

'अनगढ हीरा' के तराशत तैयब जी

रवि प्रकाश सूरज

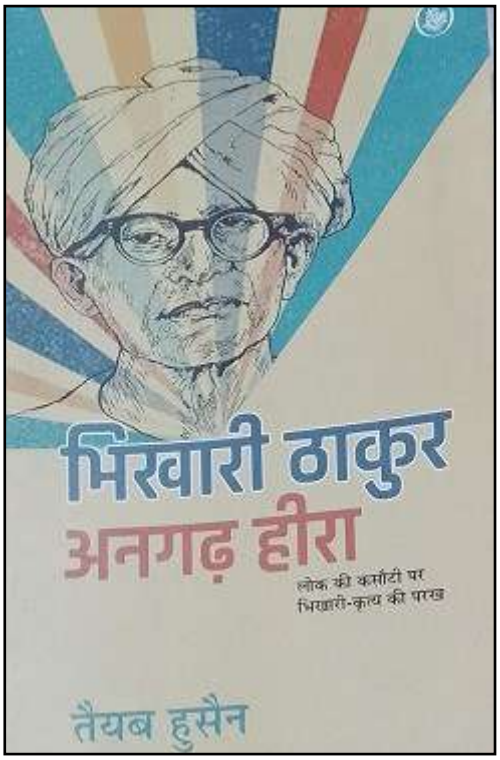

जवन दूसरका किताब के चरचा कईल जा रहल बा उ भोजपुरी किताब ना ह बाकिर भोजपुरी खातिर आ एगो अईसन शानदार व्यक्तित्व के बारे में जरुर ह जेकरा बिनु भोजपुरी साहित्य अधुरा रह जाई. 'अनगढ़ हीरा : भिखारी ठाकुर' शीर्षक से चर्चित साहित्यकार तैयब हुसैन जी के एगो टटका किताब आईल बिया जवन राजकमल प्रकाशन से छपल बिया. तैयब हुसैन भोजपुरी साहित्य खातिर कवनो नया नांव नईखीं. भिखारी ठाकुर प पहिलका पीएचडी आ मौलिक काम खातिर उहाँ के चरचा हरमेसा होखत रही. किताब में सोरह गो आलेख बा जवन भिखारी ठाकुर के कृतियन प सिलसिलेवार ढंग से आ लगभग हर पहलू प बात करत नजर आवता. तैयब जी भिखारी ठाकुर प शोध के अलावे आउर किताब लिखले बानी तबो ई किताब एह से महत्त्वपूर्ण होखतिया काहे कि तैयब जी के आलोचक दृष्टि एह किताब में आउर पुरकस अंदाज में भिखारी ठाकुर के कृत्य के समग्र रूप से पड़ताल करे में कामयाब बिया. तैयब जी एह किताब के आमुख में कहतानी कि भिखारी ठाकुर प काम करे वाल अधिकतर लोग या त उहाँ के अवतारी पुरुष बनावे के कोसिस करेला ना त नचनिया–बजनिया. आलाचना के जवन एह कसौटी के तैयब जी गढ़ले बानी ओकरा प उहाँ के पूरा तरीका से टिक के एगो अकादमिक शोध वाला दृष्टिकोण से भिखारी ठाकुर के हस्तलिपि खलिहा साहित्य आ रंगकर्म ना बलुक उहाँ के व्यक्तित्व, सामाजिक परिवेश आ आधुनिक समाज में भिखारी ठाकुर के प्रासंगिकता तक प बात रखले बानी. एह किताब के पढ़त घरी कई गो आलेख में जवन दुहराव नजर आई उ एह से कि कई गो आलेख स्वतंत्र रूप से कई गो अलगा–अलगा पत्र–पत्रिकन में छप चुकल बिया. किताब के शुरुआत लौंडा नाच के जड़ खोजत, बिदेसिया के अविर्भाव से ले के भिखारी ठाकुर के जिनगी, उहाँ के अलग–अलग रचनन के व्याख्या करत आधुनिक जुग में भिखारी ठाकुर के प्रासंगिकता आउर भिखारी के सांस्कृतिक आ सामाजिक सार्थकता प जा के खतम होखता. सोरहो आलेख के पढ़ल एगो विविधतापूर्ण रचनाकार के संउसे व्यक्तित्व आ कृतित्व के जतरा करे जईसन महसूस होखता. आलेख के बाद किताब के अंत में एगो परिशिष्ट देवल बा जवना में भिखारी ठाकुर के गाँव के जानकारी, हस्तलिपि, उहाँ के मिलल समान के सूची आ उहाँ के साक्षात्कार शामिल बा. भिखारी ठाकुर आ उहाँ के कृत्य के जाने–समझे खातिर ई एगो परफेक्ट किताब बिया जवना भोजपुरी के संगे संगे हिंदियो के पाठक वर्ग खासकर भिखारी ठाकुर प शोध के इच्छुक विद्यार्थी लोगन के लाभ चहूँपाइ.

❑❑

सुरभि कुंज,
डी एम् कोठी–क्लब रोड,
आरा (बिहार)
पिन– 802301
मो–9891087357

केशव मोहन पाण्डेय

बाजे बधाई

कोसिला घरे अइले रघुराई, हो रामा,
बाजे बधाई।
अवध–कुल गइल अगराई, हो रामा,
बाजे बधाई।

मलीन मन–मानव मंजुल हो जाई
समवेत स्वर में सब मंगल गाई
हहरत हियरा फुलाई, हो रामा,
बाजे बधाई।

धनि दशरथ धा के दरसन चाहें,
अन्तर–नयनन से परसन चाहें,
बलि जाले देखि मुसकाई, हो रामा,
बाजे बधाई।

सात सुहागिन मिल सोहर गावें,
धन–दौलत राजा जी लुटावें,
सरजू जी गइली छछनाई,हो रामा,
बाजे बधाई।

राम जी अइले, भरतो जी अइले,
शत्रुघन–सौमित्र जी अइले
आई गइले चारू भाई, हो रामा,
बाजे बधाई।

मधु–मिठास रही जो बैना में,
राम राज–सपना सजी नैना में,
जीवन सफल हो जाई,हो रामा,
बाजे बधाई।

❑❑

❍ राजापुरी, नई दिल्ली

'दरद के सोन्हाई' के लोकार्पण

पूर्वांचल साहित्य विकास समिति मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ का सौजन्य से दिनांक 14–01–2024 रविवार का दिने सुघर–सरस काव्य समारोह के आयोजन विकासखंड मुहम्मदाबाद गोहाना के सभागार में सम्पूरन भउवे, जेहमें भोजपुरी के चर्चित कवि कृष्णदेव घायल विरचित काव्य कृति 'दरद के सोन्हाई ' के लोकार्पण कार्यक्रम सफलता पवल. सि।अध्यक्ष श्री रमेश राय निर्भय अउर संचालन के कारज श्री महेन्द्र राय जी निबाहत रहीं। मुख्य अतिथि लोकायन संस्कृति न्यास के संस्थापक श्री बालेदीन बेसहारा अउर प्रमुख वक्ताश्री कमला सिंह तरकस, ई दूनहूँ विद्वान कवि लो लोकार्पित पुस्तक पर लमहर बतकही करत कार्यक्रम के सारथकता बड़े सहजग्राही ढंग से उरेहल। प्रमुख समाजसेवी श्री उमाशंकर सिंह जी जुमल साहित्यकारन के स्वागत करत सुनवइयन के सम्बोधित कइनी।

समारोह का दोसरा बखत में––

श्री रविन्द्र यादव रवि के शारद वन्दन का साथे श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह चान्स ,मतीन खैरावादी, पागल प्रेमी, कवयित्री अनीता राज,सरिता ,कविवर हरिलाल कृषक, मु–इद्रीस, अमिता बागी,राकेश दुबे, अमरेश राय, रोहिताश्व सौम्य,विजय श्रीवास्तव, कृष्णदेव घायल, कमला सिंह तरकस, बालेदीन बेसहारा, संचालक महेन्द्र राय सहित लगभग डेढ़ दरजन काव्यकार सभ सरस कविता वाचन से सुनवइयन के मन हरियर बना देहल।. अध्यक्ष श्री रमेश राय निर्भय जी अपना काव्यपाठ का साथे असीसत आयोजन के सम्पूरन कइनी।

❑❑

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/- | संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।